।। ॐ श्री सत्‌नाम साक्षी ।।

ई-पेपर

समाचार-पत्र

प्रेम प्रकाश सन्देश

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का आध्यात्मिक मासिक समाचार पत्र

15 नवम्बर 2025 वर्ष 18 अंक 08

कुल पृष्ठ - 32 वार्षिक शुल्क : ₹ 200/- (भारतवर्ष में), ₹ 2000/- (विदेश में), एक प्रति ₹ 20/-

सद्‌गुरु टेऊँराम अमृतवाणी

यह सुन कर गुरु महाराज जी अपना निर्णय देने ही वाले थे तो बीच में भाई गोविन्दराम जी खड़े होकर कहने लगे कि इस दास की यह प्रार्थना है कि इस सक्खर जनपद में आपका शुभागमन तो पहली बार ही हो रहा है। सक्खर तक के पूरे मार्ग के गाँव वाले प्रेमी लोग आपके सत्संग व दर्शन के प्यासे हो रहे हैं। उन लोगों की पत्रिकाएँ व संदेश मेरे पास आते रहते हैं, वे लोग यह जानना चाहते हैं कि गुरु महाराज जी का कार्यक्रम कैसा है? यहाँ कहीं पास में आयें तो हमें समाचार दें तो हम लोग भी गुरु महाराज जी को मनाने आयें। सो हे त्रिलोकी नाथ! आप यहाँ से जल्दी जाने का विचार न करें। हमारे इस उत्तर देश के लोग जो मोह व अज्ञान की नींद में सोए पड़े थे और संशय भ्रमों में फंस कर भटक रहे थे, ऐसे लोगों को आप जैसे महापुरुषों ने आकर मोह नींद से जगा कर सावधान किया है। इन लोगों को आपकी विलक्षण शक्ति का ज्ञान तो अभी हुआ है।

कुछ लोग कहते हैं कि ये सन्त वैरागी हैं। इनकी वाणी में बहुत शक्ति है। कुछ लोग कहते हैं कि इन सन्तों के पास कोई वशीकरण मन्त्र है जिससे सब लोगों को वश में कर रहे हैं। कुछ लोग कहते हैं कि ये सन्त जादूगर हैं और इनके घुँघरूदार डण्डों में जादू भरा हुआ है, जो कोई भी भजन सुनता है तो अपना घर बार छोड़ कर इनके पीछे चल पड़ता है। हे भगवन् ! हमारे इस देश में सन्त-महात्मा तो बहुत ही आते-जाते रहते हैं। परन्तु आप जैसे अभेदी, निर्मानी और निष्कामी सन्तों को तो इन लोगों ने कभी देखा तक नहीं है। इसलिये जो लोग प्रार्थना करें, उन लोगों के गाँवों में पधार कर उन लोगों की आशा पूर्ण करते जायें। यह सुन कर गुरु महाराज जी ने भिरकण गाँव व अब्दू गाँव वालों को आज्ञा दी कि आप लोग होथिनि गाँव में सन्तों को लेने आवें, यह सुन कर सब प्रेमी प्रसन्न होकर प्रसाद लेकर अपने घर को गये, गुरु महाराज जी भोजन पाकर आराम करने लगे।

प्रातः सात से नौ बजे तक का सत्संग समाप्त होने पर गाँव का मुखी व सब पंच, प्रेमी लोग पैसे और वस्त्र आदि भेंट लेकर आये। प्रेमियों द्वारा लायी गयी भेंट स्वीकार कर गुरु महाराज जी ने भाई गोविन्दराम व भाई सोमनराम को कहा कि यह जो कुछ भी है वह सब गाँव के गरीब, अनाथों व विधवाओं में बाँट देना। गुरु महाराज जी को जो कुछ भी मिलता था वो सब बाँट दिया करते थे। तत्पश्चात् आराम कर सायं चार बजे सबसे विदा हो कर गाते-बजाते होथिनि गाँव को चल पड़े। चलते समय सब प्रेमियों को कहने लगे कि जो लोग हमारे साथ चलना चाहें वे

शेष पेज नं. 2 पर...

पेज नं. 1 से आगे...

भली चलें और दूसरे लोग लौट कर वापस जायें। होथिनि गाँव बहुत दूर नहीं है। रात को सब लोग वहाँ पर सत्संग में आयें। फिर मुरलीधर से पूछा कि तुम चलोगे ? यह सुन कर मुरलीधर ने कहा कि हे प्रभु! मैंने रात एक स्वप्न देखा है कि गुरु महाराज जी मुझे चलने के लिये कह रहे हैं। सो सवेरे उठ कर यह प्रतिज्ञा की कि अगर गुरु महाराज जी ने चलने के लिये आज्ञा की तो मैं अपनी पढ़ाई भी छोड़ कर गुरु महाराज जी के साथ चला जाऊँगा और स्वप्न की बात को सच्चा समझूंगा, सो मैं चलता हूँ। वहाँ खड़े बसन्तराम, प्रेमानन्द, गणेशानन्द, सन्तदास और दूसरे लड़के भी कहने लगे कि स्वामी जी! हम भी चलेंगे। सन्तों के साथ लड़कों के जाने की बात किसी ने जाकर लड़कों के माता-पिता को सुना कर कहा कि आप लोगों के लड़के सन्तों के साथ जा रहे हैं। यह सुन कर लड़कों के सम्बन्धी लोग झट से आकर लड़कों को पकड़ मार-पीट, डाँट-झपट कर अपने-अपने घर ले गये। गुरु महाराज जी मण्डली सहित होथिनि गाँव पहुँच कर भाई ताराचन्द की बैठक पर विराजमान हुए।

थोड़ी देर वहाँ पर बैठ कर जलपान कर फिर सत्संग-मण्डप में जाकर विराजमान हुए। रात के सत्संग का समय होने पर पास-पड़ोस से आये हुए लोगों की बहुत सी भीड़ पहले से ही लग गयी थी। गुरु महाराज जी सत्संग आरम्भ करते हुए कहने लगे कि भगवान के मिलने के मार्ग अनेक होते हुए भी सभी चलने में बहुत कठिन बताये गये हैं। उन समस्त मार्गों में से एक ही मार्ग है जिसके द्वारा यह जीव जल्दी ही प्रभु से मिल जाता है। वह मार्ग है प्रेम का। जिस प्रकार वायु का प्रचण्ड वेग, जल में आयी हुई भयंकर बाढ़ और भूकम्प इन तीनों का रोका जाना अति दुष्कर बताया गया है। ठीक उसी प्रकार प्रभु प्रेम में मस्त रहने वाले वैरागी भी तमाम संसार के निकटतम सम्बन्धियों व सहयोगियों और संसार के मनमोहक चित्ताकर्षक, देखने से ही सहसा मन को मथ डालने वाले चमकीले और रसीले पदार्थों द्वारा कभी भी रोके नहीं जा सकते। क्योंकि प्रेम का मार्ग सब मार्गों से निराला बताया गया है।

धरती पर चलने वाली जितनी कुछ गाड़ियां हैं, उनके मार्ग पहाड़ों, नदियों, जंगलों तथा सागरों द्वारा रोके जा सकते हैं। जब तक पहाड़ों को खोद कर, नदियों पर पुल बाँध कर और जंगलों को काट कर मार्ग न बनाये जायें, तब तक कोई भी मनुष्यकृत गाड़ी आगे नहीं जा सकती। किन्तु वायुयान का तो मार्ग ही निराला है। पर्वतों के ऊँचे-ऊँचे शिखर तो क्या परन्तु भयानक मकरों से भरे सागर से भी वायुयान के मार्ग को रोक नहीं सकते । इतना होने पर भी तूफान के द्वारा वायुयान का मार्ग रोका जा सकता है । परन्तु यह प्रेम का मार्ग तो सबसे निराला बताया गया है । प्रेम के विषय को जारी रखते हुए सन्त सुन्दरदास जी के पदों को बोल कर गुरु महाराज जी कहने लगे कि-

छन्द- **प्रीति की रीति कछू नहिं राखत, जाति न पाति नहीं कुल गारो ।**
प्रेमकु नेम कहूं नहिं दीसत, लाज न कान लग्यो सब खारो ।।
लीन भयो हरि सूँ अभि अन्तर, आठहु याम रहे मतवारो ।
सुन्दर कोइक जानि सके यह, गोकुल गाँव को पैंडोहि न्यारो ।।

जिस किसी को भी प्रभु परमात्मा का सच्चा प्रेम लग जाता है, तो फिर उसको जाति-पाति और वर्णाश्रमों के सुदृढ़ बन्धन भी कभी बांध नहीं सकते । वे प्रेमी लोग कुल, लोक और वेद तीनों लज्जाओं को भी तोड़ डालते हैं, तमाम दुनिया की बातों की ओर उन लोगों का ध्यान कभी नहीं जाता । क्योंकि उन लोगो की तमाम मानसिक वृत्तियां प्रभु के प्रेम में सदा निमग्न रहती हैं । कवि शिरोमणि सुन्दरदास जी के विचारों को बतलाते हुए गुरु महाराज जी कहने लगे कि प्रेम का मार्ग सभी मार्गों से सर्वथा भिन्न और विलक्षण है । सांसारिक विषय भोगों द्वारा मोहित हुए लोग इस प्रेम मार्ग को कभी भी नहीं जान सकते । निम्नलिखित भजन की व्याख्या करते हुए गुरु महाराज जी कहने लगे कि-

शेष अगले अंक में...

।। ॐ सत्नाम साक्षी ।।

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का आध्यात्मिक मुखपत्र

प्रेम प्रकाश सन्देश

15 नवम्बर 2025

वर्ष 18 अंक 8

मंगल आशीष

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज
सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज
सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज
सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज

संस्थापक

सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज

संरक्षक–मार्गदर्शक–प्रेरणास्त्रोत

सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज

सदस्यता शुल्क

अवधि	भारत में	विदेश में
एक वर्ष के लिये	₹ 200	₹ 2000
दो वर्ष के लिये	₹ 400	₹ 4000

मनीआर्डर भेजने व पत्र व्यवहार के लिये पता :
व्यवस्थापक, प्रेम प्रकाश सन्देश
प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ,
लश्कर, ग्वालियर–474001 (मध्यप्रदेश)
मोबा. 0751–4045144
सम्पर्क समय : प्रात 8 से 10 बजे तक (तात्कालिक व्यवस्था)
e-mail : prempraka shsandesh@gmail.com

Bank Facility

आईडीबीआई बैंक में आप कोर सुविधा/मनी ट्रांसफर के माध्यम से भी निम्न खाते में शुल्क जमा कराके फोन 0751–4045144 पर अथवा व्हाट्स् एप नम्बर 8989701236 पर सूचना दे सकते हैं.

A/c 92610010000468
Net Bankig : IFSC: IBKL0000545
Editor Prem Prakash Sandesh, Gwalior

नई सदस्यता अथवा नवीनीकरण के लिये सदस्यता शुल्क आप मनीआर्डर/कोर बैंक माध्यम के अलावा सद्गुरु महाराज जी की यात्रा के समय बुक स्टॉल पर व देश भर के विभिन्न शहरों में हमारे प्रतिनिधियों के पास जमा कर सकते हैं. इसके अलावा परम पावन गुरु धाम श्री अमरापुर दरबार (डिब), जयपुर के श्री अमरापुर सत्साहित्य केन्द्र में प्रतिदिन एवं रविवार प्रातः 8 से 12 व प्रत्येक गुरुवार–शनिवार सायं 5 से 8 बजे तक श्री कुमार चन्दनानी, श्री नारायणदास रामचंदानी, श्री निहालचंद तेजनानी व श्री अशोक कुमार पुरसानी के पास जमा किया जा सकता है.

गुरु महिमा

कवित्त

गुरु ब्रह्म है गुरु हीं विष्णु गुरु है रूप महेश्वर का,
मानव तन धर आया मानों पूर्ण स्वरूप परमेश्वर का।
भक्तों को दें दिशा बोध बन उत्तर दिशि का ध्रुव तारा,
ज्ञान की ऐसी ज्योति जलाएँ आलोकित हो जग सारा।
मन पर वश ना चले तनिक भी मायाजाल में जकड़ रहा,
ऊँचा पद अथाह धन दौलत बना प्रलोभन पकड़ रहा।
भौतिक सुख में मन ना भटके बोलो कहाँ युक्ति पावें,
काम क्रोध मद मोह लोभ से कैसे भला मुक्ति पावें?
कहीं मार्ग ना सूझे कोई षट्रिपु का घनघोर है पाश,
खोज रहा मन अंधियारे में पग पग पर हर ओर प्रकाश।
अंधकार में भटके जन सत्गुरु से हीं प्रकाश पाएँ,
वे हीं हैं ज्वलंत मशाल चीरें तम पथ दिखला पाएँ।
सरल चित्त से आस्था से श्री गुरु शरण में जो जावे,
गुरु की कृपा शीश पर बरसे अंजलि भर भर सुख पावे।
मन में रहे ना कोई दुविधा पा जावे जीवन का सार,
गुरु को सौंपो जीवन–नौका कर जाओ भव सागर पार।

अनुक्रमणिका

अनुक्रम	विषय	पृष्ठ
01.	सद्गुरु टेऊँराम अमृतवाणी	1–2
02.	प्रेम प्रकाश पंथ के संस्थापक आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज	4
03.	हे मन! जागो! सोचो! समझो और जीवन में उतारो (स्वामी सर्वानन्द चरितामृत)	5–6
04.	रोटी के प्रकार (प्रेरक प्रसंग)	6
05.	गीता चिंतन–आचार्य सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज द्वारा विरचित सद्ग्रंथ में	7–8
06.	गीता ज्ञान (पूज्यपाद स्वामी रामसुखदास जी महाराज)	9–10
07.	पावन श्रीमद भगवद गीता स्वाध्याय, दोहे	11
08.	गीता जन्म मरण को सुधार देती है, गीता सन्देश–उपदेश, भजन	12
09.	रामायण तत्वार्थ (पावन प्रसंग), स्वास्थ्य संबंधी दोहे	13–14
10.	श्रीमद्भागवद् कथांश	15
11.	भगवान से मिलने की हो व्याकुलता (प्रेरक प्रसंग)	16
12.	पावन प्रसंग	17
13.	भक्त नामदेव जी की श्रद्धा–भक्ति	18–19
14.	युक्ति से ही मिलती है मुक्ति (आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज)	19
15.	श्री अमरापुर स्थान सहित सभी आश्रमों में रही कार्तिकोत्सव की धूम	20
16.	जयपुर में गोपाष्टमी महोत्सव मनाया गया समाचार–चित्र	21–22
17.	श्री प्रेम प्रकाश आश्रम कोटा का वार्षिकोत्सव सम्पन्न समाचार	23
18.	श्री प्रेम प्रकाश धाम दिल्ली का वार्षिकोत्सव धूमधाम से मनाया गया समाचार	24
19.	गयाजी धाम में पितरों के निमित्त पूजन–सत्संग समारोह समाचार	25
20.	स्वामी जीवनमुक्त जी महाराज का वर्सी उत्सव, पानी का सेवन कितना उपयोगी	26
21.	जयपुर में श्री अमरापुर सेतु का नामकरण समारोह समाचार	27–28
22.	सेहत–वजन वृद्धि मोटापा	29
23.	अमरापुर गमन	30
24.	व्रत–पर्व–उत्सव	30
25.	पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज एवं संत मण्डली का यात्रा कार्यक्रम	31
26.	ब्रह्मदर्शनी (सिंधीअ में समुझाणी)	32

प्रेम प्रकाश पंथ के संस्थापक
आचार्यधीश सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज

संत सर्वेश बापू

भारत खण्ड संतों की भूमि है ! इस भूमि पर सदैव अनेकानेक संतों का प्रादुर्भाव होता रहा है ! देश के विभाजन के समय भारत खण्ड का एक भाग पाकिस्तान बन गया और इसी भाग के सिन्ध प्रान्त में एक अनूठे संत परमाचार्य, प्रेम प्रकाश मण्डल के संस्थापक, ब्रह्मलीन, सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का प्राकट्य हुआ । पूज्य स्वामी श्री टेऊँरामजी महाराज एक ऐसे आचार्य थे, एक ऐसे सद्गुरु थे, एक ऐसे समाज सुधारक थे, जिन्होंने भगवत प्रेम का सच्चा प्रकाश, केवल देश में ही नहीं अपितु पूरे जगत में ऐसा फैलाया कि इस प्रेम का दर्शन करने वाला प्रत्येक मनुष्य, भक्तिरस में डूब जाता है, ऐसे समर्थ संत महापुरुषों के आगे तो भगवान भी उनके आधीन हो जाते हैं, भगवान स्वयं ऐसे संत की महिमा गाते है, परमात्मा स्वयं भागवत में कहते हैं-

साधवो हृदयं महाम् साधूणां हृदय त्वहं !
मद्रद्यन्ते न जानन्ति नाहं तेभ्यो मनागपि !!

भगवान कहते है कि साधु मेरा हृदय है और मैं साधु का हृदय हूं, मेरा साधु मेरे सिवा कुछ नहीं जानता और मैं मेरे साधु के सिवा कुछ नहीं जानता, अर्थात सच्चे संत ब्रहाद्रष्टा होते है, सबमें परमात्मा के दर्शन करते हैं और जगत के कल्याण के लिये ही सच्चे संत जीते हैं !

आचार्य सद्गुरु श्री १००८ टेऊँराम जी महाराज ऐसे दया के सागर थे, जिन्होंने अपने जीवन का प्रत्येक क्षण समाज के कल्याण के लिए समर्पित किया और सदैव मानव समाज को अपने सदोपदेश के द्वारा नश्वरता से अमरता की ओर ले जाने का प्रयास किया, अपने उपदेश में वह संसार की नश्वरता का बोध कराते हुए फरमाते हैं.

धन दौलत तो दूर है, साथ न चालत देह !
टेऊँ निकसे प्रान के, जरत चिता में ऐह !!

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज कहते है, हे प्राणी! तू धन दौलत में क्या ममता लगाये बैठा है, अरे ये धन दौलत तो दूर की बात है, तेरा अपना शरीर भी तेरे साथ चलने वाला नहीं है, प्राणों के निकल जाने पर यह शरीर भी चिता में जलकर राख हो जायेगा, इसलिये हे मानव ! तू जाग जा और अपने आत्म तत्व को पहचान, महापुरुष हमें जाग्रत कर रहे हैं कि ये संसार नश्वर है, इससे हमारा शाश्वत सम्बन्ध नहीं है, हमारा सच्चा सम्बन्ध तो परमात्मा से है, आगे सद्गुरु जी ये भी उपदेश करते हुए फरमाते हैं.

आशा, तृष्णा, ईर्ष्या, चौथी चिंता आग !
टेऊँ इस से जलत सब, बाचे को बड़भाग !!

महापुरुष फरमा रहे है कि आशा, तृष्णा, ईर्षा और चिन्ता एक आग है, जिसमें सभी जल रहे हैं, इस आशा, तृष्णा आदि अग्नि से कोई बड़भागी ही बच पाता है, बड़भागी वह है जिसे सच्चे सद्गुरु की प्राप्ति हुई है ! स्वामी टेऊँराम जी महाराज जैसे सच्चे सद्गुरु ही जीवों को अज्ञान से ज्ञान के प्रकाश की ओर ले जा सकते हैं । सद्गुरु ही हमें बोध कराते हैं कि संसार असार है और इस में सच्चे सुख की प्राप्ति नहीं हो सकती, अर्थात् संसार की आशाए धन दौलत की तृष्णा व्यर्थ है, आशा यदि करनी है तो हम भगवत प्राप्ति की आशा करें, तृष्णा यदि रखनी है तो प्रभु भक्ति की तृष्णा मन में रहे और किसी से भी ईर्ष्या न करें, क्योंकि यहां ईर्षा किससे करेंगे, सभी में तो आत्म रूप में हमारे परमात्मा ही विराजमान है । सद्गुरु संत हमें यही ब्रह्मदृष्टि प्रदान करते हैं कि सबमें अपने प्रभु को ही देखो । सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज के प्रेम प्रकाश मण्डल की स्थापना करने का उद्देश्य ही यही था कि घट-घट में प्रेम का प्रकाश हो और सभी लोग उस सच्चे आनन्द का अनुभव प्राप्त कर सकें, आज देश भर में प्रेम प्रकाश मण्डल की जहां जहां भी शाखाएं है ! आश्रम है, उनमें सद्गुरु के द्वारा स्थापित किये गये आदर्शों का पालन करते हुए जो संत सेवा, अतिथि सेवा, गौ सेवा और समाज के कल्याण के कार्य हो रहे हैं, उनको देख कर हमारा हृदय आनन्द से भर जाता है, ऐसे महापुरुषों को और उनकी इन पावनतम सेवाभावी परम्पराओं को हमारा बारम्बार नमन है। और कोटि.कोटि वन्दन !

श्री अमरापुर स्थान, जयपुर

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश अपने गुरू में शिष्य की प्रीति, प्रेम, श्रद्धा व विश्वास होना चाहिए।

हे मन! जागो! सोचो! समझो और जीवन में उतारो!!

सद्गुरु सर्वानन्द जीवन चरितामृत से उद्धृत

पद-प्रतिष्ठा, मान-सम्मान मिलने पर हर मनुष्य को गर्व-घमण्ड हो जाता है. अतः सावधान होकर अपने मन को समझाने का प्रयास करें जिससे जीवन सँवर जायेगा. हम अपने मन को सचेत करें. मन को यह घमंड हो जाता है कि लोग मेरे दर्शन करने और सत्संग सुनने की प्रतीक्षा करते हैं. प्रेमी भक्त लोग सम्मान पूर्वक मुझे भोजन के लिये निमंत्रण देते हैं, घर पर बुलाते हैं, श्रद्धा से सोने-चाँदी के बर्तनों में भोजन खिलाते हैं. मेरे चरण धोकर चरणामृत का पान करते हैं. रुपये पैसे इत्यादि भेंट करते हैं, मेरी सेवा करते हैं. सवारी के लिये मोटर गाड़ी कारें, हवाई जहाज (वायुयान) की व्यवस्था करते हैं. भक्त लोग मुझे विदेशों में बुलाते हैं. समाचार पत्रों में मेरी महिमा और चमत्कारों के लेख छपवाते हैं. बड़ी-बड़ी सभाओं में मेरे गुण गाते हैं. मेरे नाम की जय-जयकार मनाते हैं और मुझे भगवान कहकर पुकारते हैं.

मेरे घमंडी मन! कुछ विचार कर, लोगों के इस प्रकार के व्यवहार को देखकर तुम सचमुच अपने आप को गुरू और भगवान समझ बैठे. ऐ मेरे मूर्ख मन! यह तो तुम्हारी बड़े में बड़ी भूल है, घर से चले थे मोक्ष प्राप्त करने, पर तुम तो उलटे बन्धन में पड़ गये. मेरे मित्र मन! सुनो तो तुम्हें सुनाऊँ, जो भोले भाले, सादे सूदे और श्रद्धालु लोग हैं, जो स्वार्थी और लोभी हैं. वे लोग लोभ से, भय से और अज्ञान से तुम्हारी प्रशंसा करते और यश गाते हैं, वे ही तुम्हें भगवान इत्यादि की बड़ी बड़ी उपाधियों (पदवियों) से अलंकृत करते हैं. तुम भी बिना सोचे समझे उन चापलूसों के चक्कर में फंसकर अपने आपको भगवान समझ बैठ गये. मेरे बुद्धिमान मन! तू अपने आप को देख! ज़रा अपने अन्दर में झाँक कर तो देख. क्या तू सचमुच भगवान है? या स्वार्थियों चापलूसों का बनाया हुआ नकली भगवान है. तुम अपनी परीक्षा स्वयं लो. देख, मेरे भले मन! तुम जो इतना अभिमान करते हो, अपने आपको बड़ा आदमी समझते हो, बताओ तो सही आपको क्या मिला है, वह भी मैं जानता हूँ; क्योंकि मैं तेरे अन्दर बैठा हूँ. तुम्हारी सब बातों को जानता हूँ. मेरे चंचल मन! अब कान देकर ध्यान से सुन! तुम्हें पद-अधिकार मिला, पूजा-प्रतिष्ठा मिली, शिष्य-सेवक (चेले-चेलियाँ) मिले, धन-सम्पत्ति मिली, मान-सम्मान मिला, देश-विदेश के निमंत्रण मिले, सवारी के लिये मोटर कारें वायुयान मिले, स्वादिष्ट भोजन मिले, पहनने के लिये नर्म-गर्म रेशमी कपड़े मिले, दुनिया भर की सभी सुख-सुविधाएँ मिलीं.

बस! और तुम्हें क्या मिला?

मेरे निष्ठुर मन! जो कुछ तुम्हें मिला है, वह तो एक राजा, एक धनवान को भी मिल सकता है. तुम तो व्यर्थ ही गर्वीले हो रहे हो, मेरे प्यारे मन! मुझे बता तो सही, क्या तुम्हारे बन्धन कट गये? क्या तुम्हारा देह अध्यास नाश हो गया? क्या तुम्हारा राग-द्वेष मिट गया? क्या तुम्हारी भेद बुद्धि नष्ट हो गयी? क्या तेरी मैं मेरे की भावना मिट गयी? क्या तुमने पक्षपात् करना छोड़ दिया? क्या तुमने लोभ-लालच काम-क्रोध छोड़ दिये? क्या तुम्हारे अंदर से तीन कंकारों अर्थात् कंचन, कामिनी और कीर्ति की चाहना (वासना) निकल गयी? मेरे सुजान मन! कुछ समझने की कोशिश कर. जो कुछ पर उपकार के कर्म तुमने किये हैं, वे भी बड़ों के नाम पर चंदा चीरा कर किये हैं, फिर भला क्यों इतनी शेखी बधारते हो. तुमको जो कुछ मान-बढ़ाई मिली है, या मिल रही है, वह सब गुरू कृपा है. पर तुम तो ऐसे नमक हराम निकले जो गुरू की कृपा को भी भुला बैठे. मेरे मूर्ख मन! डींग मारते तुम्हें शर्म (लज्जा) नहीं आती. तुम्हें धिक्कार है. चाटुकारों के चक्कर में पड़कर तुम अपने को कुछ का कुछ समझ बैठे. मोक्ष के अर्थ को उलटा समझ बैठे. मेरे मन! तुम्हें माया ने मतवाला, पैसों ने पागल, अधिकार ने अंधा और बड़प्पन ने बहरा बना दिया है, जो न तो किसी को सुनते हो, न देखते हो और न ही समझते हो. तुमने तो गुरू के वचनों (आदेशों) को भी ताक पर धर दिया है अर्थात् उनका पालन नहीं किया.

मेरे सज्जन मन! लो लोग इस संसार सागर से तैरे हैं, वे तुम्हारी तरह नहीं तैरे हैं, वे तो अपनी करनी कर तैरे हैं.

पूजा-प्रतिष्ठा, मान-बड़ाई, स्वागत-सत्कार इत्यादि दुनिया के सब सुख-सुविधाएँ पाकर तुम्हें भ्रम हो गया है कि अब मैं तैर गया हूँ, मेरा मोक्ष हो गया है. पर मेरे मन याद रख! सुन लेना, पढ़ लेना, याद कर लेना, गाना बजाना, कथा कीर्तन, सत्संग कर लेना, लोगों का मन बहला देना इत्यादि कोई बड़ी बात नहीं है. तुम तो यह समझ बैठे कि ऐसा करने से मैं मुक्त हो जाऊँगा, मैं भगवान हो गया. परन्तु यह तेरा निरा भ्रम है. ऐसा करने से कभी भी मुक्ति प्राप्त नहीं हो सकती. तुम्हारी आँखें और कान धोखे में हैं. मेरे मन! जो कुछ दिख सुन रहे हो वह सत्य नहीं है, सत्य तो कुछ और ही है. मेरे प्यारे मन! जिस समय तुम भक्ति, ज्ञान, वैराग्य, कर्म, योग, जप, तप, व्रत इत्यादि विषयों पर प्रवचन देते हो उस समय सुनने वाले ऐसा समझते हैं कि इस संत जैसा कोई योगी, वैरागी, ज्ञानी, गुरुभक्त दूसरा कोई नहीं होगा. तुम स्वयं भी अपने आप को वैसा ही समझते हो. परन्तु हे मेरे मन! समझने का प्रयत्न कर. दूसरों को सुनाना समझाना बहुत सरल बात है, पर स्वयं वैसा आचरण करना बहुत ही कठिन है. जो व्यक्ति स्वयं वैसा आचरण नहीं करता उसके ज्ञान-ध्यान, कथन-उपदेश सब व्यर्थ हैं.

हे मेरे मन ! अब मोह अज्ञान की नींद से जाग, सावधान हो जा, व्यर्थ की बातों को छोड़कर शुद्ध आचरण कर, इस जन्म में ही मोक्ष को प्राप्त कर. जिससे तेरा कल्याण हो.

(प्रस्तुत आलेख पवित्र पुस्तक सद्गुरु सर्वानन्द जीवन चरितामृत से लिया गया है— जो हम सबके लिये बड़ा अनुकरणीय है. इसे हम पढ़कर अपने मन को आप ही समझा सकेंगे. जिससे हमारे मन में कभी अभिमान—गर्व नहीं आवे.)

रोटी के प्रकार

रामेश्वर ने पत्नी के स्वर्ग वास हो जाने के बाद अपने दोस्तों के साथ सुबह शाम पार्क में टहलना और गप्पें मारना, पास के मंदिर में दर्शन करने को अपनी दिनचर्या बना लिया था।

हालांकि घर में उन्हें किसी प्रकार की कोई परेशानी नहीं थी। सभी उनका बहुत ध्यान रखते थे, लेकिन आज सभी दोस्त चुपचाप बैठे थे।

एक दोस्त को वृद्धाश्रम भेजने की बात से सभी दुःखी थे 'आप सब हमेशा मुझसे पूछते थे कि मैं भगवान से तीसरी रोटी क्यों माँगता हूँ? आज बतला देता हूँ।'

कमल ने पूछा 'क्या बहू तुम्हें सिर्फ तीन रोटी ही देती है ?'

बड़ी उत्सुकता से एक दोस्त ने पूछा? 'नहीं यार! ऐसी कोई बात नहीं है, बहू बहुत अच्छी है।'

असल में 'रोटी, चार प्रकार की होती है।'

पहली 'सबसे स्वादिष्ट' रोटी 'माँ की ममता' और 'वात्सल्य' से भरी हुई। जिससे पेट तो भर जाता है, पर मन कभी नहीं भरता।

एक दोस्त ने कहा, सोलह आने सच, पर शादी के बाद माँ की रोटी कम ही मिलती है। 'उन्होंने आगे कहा' हाँ, वही तो बात है।

दूसरी रोटी पत्नी की होती है जिसमें अपनापन और 'समर्पण' भाव होता है जिससे 'पेट' और 'मन' दोनों भर जाते हैं। क्या बात कही है यार ? ऐसा तो हमने कभी सोचा ही नहीं।

फिर तीसरी रोटी किस की होती है?एक दोस्त ने सवाल किया।

'तीसरी रोटी' बहू की होती है जिसमें सिर्फ 'कर्तव्य' का भाव होता है जो कुछ कुछ स्वाद भी देती है और पेट भी भर देती है और वृद्धाश्रम की परेशानियों से भी बचाती है, थोड़ी देर के लिए वहाँ चुप्पी छा गई।

'लेकिन ये चौथी रोटी कौन सी होती है ?' मौन तोड़ते हुए एक दोस्त ने पूछा-

'चौथी रोटी' नौकरानी की होती है। जिससे ना तो इन्सान का 'पेट' भरता है न ही 'मन' तृप्त होता है और 'स्वाद' की तो कोई गारँटी ही नहीं है, तो फिर हमें क्या करना चाहिये यार?

माँ की हमेशा पूजा करो, पत्नी को सबसे अच्छा दोस्त बना कर जीवन जिओ, बहू को अपनी बेटी समझो और छोटी मोटी गलतियाँ नजरन्दाज कर दो बहू खुश रहेगी तो बेटा भी आपका ध्यान रखेगा।

यदि हालात चौथी रोटी तक ले ही आयें तो भगवान का शुकर करो कि उसने हमें जिन्दा रखा हुआ है, अब स्वाद पर ध्यान मत दो केवल जीने के लिये बहुत कम खाओ ताकि आराम से बुढ़ापा कट जाये, बड़ी खामोशी से सब दोस्त सोच रहे थे कि वाकई, हम कितने खुशकिस्मत हैं।

संकलित

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी

जब आप दूसरों को सुखी करते हैं, तो स्वयं भी सुख का अनुभव करते हैं। फिर क्यों दूसरों को दुःखी करते हैं।

आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज द्वारा विरचित सद्ग्रंथ में

'गीता चिन्तन'

गीता जयंती विशेष

श्रीमद्भगवद्गीता-- विश्व में ऊँचे से ऊँचे दार्शनिक मूल्य को कौन नहीं जानता. महिमावंत इस सद्ग्रंथ में सर्वलौकिक कल्याणकारी ज्ञान के आगे सभी श्रद्धापूर्वक नतमस्तक हुए हैं. क्या देशी क्या विदेशी सभी विद्वानों ने गीता की उदार हृदय से महिमा गाई है. स्वयं भगवान ने भी अपने श्रीमुख से गीता का गौरव गान किया है, भारतीय मनीषा तो गीता को भगवद् स्वरूप ही मानती है इसमें कोई दो राय नहीं. ऐसे तात्त्विक सात्त्विक ग्रंथ के लिए हम भला क्या कह सकते हैं. महात्मा गांधी जी कहा करते थे कि गीता मेरी माँ है, जब-जब भी मैं संकट में होता हूँ तो गीता की शरण में चला जाता हूँ और वहाँ से मुझे नई रोशनी मिल जाती है- समस्या का समाधान मिल जाता है. तो ऐसे वैश्विक सद्ग्रन्थ के लिए सभी धर्मों के विद्वानों ने भावपूर्वक विचार रखे हैं और दास का भी ऐसा मानना है-

गीता जहिड़ो ज्ञान- आहे किथे कीनकी।
जंहिंजी महिमा मुख सां- पाण कई भगवान।।
ऊँचे में ऊँचो आहे- शास्त्र हीउ महान।
मञे सारो जहान- गीता ग्रंथ जे ज्ञान खे।।

यानि श्रीमद्भगवद्गीता आज भी दुनिया के धर्म ग्रंथों में एक प्रधान धर्मग्रंथ है. ऐसे वैश्विक ग्रन्थ की महिमा को हमारे प्रेम प्रकाश मण्डलाचार्य मंगलमूर्ति सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने जाना और उन्होंने अपनी अमृतवाणी 'श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ' में गीता की महिमा को उजागर करते हुए लिखा-

।। राग सोरठ भजन ।।

गीता का सुन ज्ञान रे, तेरा भ्रम हरेगा।।टेक ।।
सोच जिसीका ना हो करना,
सोच उसी में ना तुम पड़ना।
ये पण्डितों का ध्यान।।1 ।।

अमर आत्मा तन से न्यारा,
कोय न तांको छेदनहारा।
व्यापक व्योम समान।।2 ।।
जड़ परिणामी असत् शरीरा,
तांका शोक करत नहिं धीरा।
आत्म सत् पहिचान।।3 ।।
जो सत् है सो कबहुँ न नासे,
जोय असत् सो कबहुँ न भासे।
कहे टेऊँ सत् जान।।4 ।।

गीता ज्ञान का गौरव गान करते हुए आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ के राग सोरठ भजन में लिखते हैं- कि गीता का ज्ञान कितना महान् है उसका श्रवण-मनन जो करता है- **'गीता का सुन ज्ञान, रे तेरा भ्रम हरेगा।'** आचार्य श्री कहते हैं कि गीता ज्ञान श्रवण करने से ही जीव के भ्रमों (वहम, संशय) का भंजन अर्थात् नाश होगा. तो पहली बात यह ज्ञान भ्रमों संशयों का भंजन करता है. दूसरा यह (गीता ज्ञान) हमें

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

हमारी प्रार्थना का 'सार-तत्त्व' क्या होना चाहिये ? मुक्ति।

व्यर्थ चिंतन से छुड़ाता है. तीसरा यह आत्मा की अमरता से परिचय करवाता है. चौथा यह असत् से हटाकर सत् का बोध कराता है और अंत में हमें शोक सागर से ही पार कर देता है. तो ऐसा यह पावन सद्ग्रंथ है- **श्रीमद्भगवद्-गीता.**

और देखिये- आचार्य सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज ने अत्यंत संक्षेप में सार रूप में गीता-ज्ञान को यहाँ प्रस्तुत कर, उसके श्रवण पर प्रकाश डाला है. तो ऐसा जो भ्रम भंजक व सत् का बोध कराने वाला यह ग्रन्थ है, यह अपने आप में महिमावंत है. आचार्यश्री कहते हैं ऐसे महिमावंत ग्रंथ के ज्ञान को नित्य श्रवण करें जिससे तुम्हें सत्य का यथार्थ बोध हो और तुम संसार में सुखी होकर विचरण करो.

एक अन्य पद में आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज प्रेरणा करते हुए कहते हैं कि हे मेरे प्यारे मीत, ध्यान देकर सुनिये- आप न केवल गीता का श्रवण करें, अपितु इसका स्वाध्याय भी जरूर करें. आचार्य जी लिखते हैं-

।। राग भैरवीं भजन ।।

सुनो सज्जन मीता पढ़ो ज्ञान गीता।
जन्म जात बीता अमुल श्वास सारे।।टेक ।।

1. धर्म शील धारो, हरी हर उच्चारो।
ममत मोह टारो, चलो चारु चारे।।

2. करो सफल चोला, समय यह अमोला।
बनो मीत गोला, गुरू के द्वारे।।

3. वचन गुरु ध्याओ, सुरति को समाओ।
कहे टेऊँ पावो, मुक्ति धाम प्यारे।।

भगवद्पाद आचार्य प्रवर कहते हैं कि भाई जिस ग्रंथ के श्रवण करने से इतना लाभ मिलता है, तो क्यों न इस ग्रन्थ को आप किसी ज्ञानी गुरु के द्वार जाकर स्वयं इसका स्वाध्याय करें. आज जिस ग्रंथ के श्रवण की इतनी महिमा सुन रहे हो. यदि आप उसका स्वयं स्वाध्याय करेंगे तो आप और अधिक लाभान्वित होंगे. इसलिए किसी ने कहा है- **'गीता सुनो- सुखी बनो, गीता पढ़ो-आगे बढ़ो.'** एक दूसरी जगह एक कवि ने लिखा है- **'सब संतों की सुंदर राय, करें गीता का स्वाध्याय.'** क्योंकि **'प्रेम जैसा पंथ नहीं, और गीता जैसा ग्रंथ नहीं.'** अतएव यहाँ पर आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज भी अपनी अमृतवाणी श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ में प्रस्तुत पदों द्वारा हमें गीता के श्रवण व स्वाध्याय की प्रेरणा करते हैं. आचार्य भगवद्पाद आदिगुरु शंकराचार्य भी भज गोविन्दम् स्तोत्र में कहते हैं- जो भगवद्गीता का किंचित भी अध्ययन करता है उस स्वाध्यायी साधक की यमराज चर्चा ही नहीं करता यानि वह यमराज के दण्ड से मुक्त हो जाता है, इसलिए सब ज्ञानियों का यह कहना है कि जिसे भय, शोक, चिंता आदि से मुक्त होना है तो वह नित्य गीता का स्वाध्याय करे! एक कवि ने सुंदर लिखा है-

यदि पढ़ना पवित्र ग्रन्थ तुम्हें, और चलना पावन पथ तुम्हें
तो मत कर तू बर्बाद समय- बस गीता को पढ़।
यदि सुनना दुर्लभ ज्ञान तुम्हें और
समझना सुलभ कि ज्ञान तुम्हें,
तो मत कर तू बर्बाद समय- बस गीता को पढ़।
यदि पाना बोध यथार्थ तुम्हें, और करना है परमार्थ तुम्हें,
तो मत कर तू बर्बाद समय- बस गीता को पढ़।
यदि मिटानी आधि व्याधि तुम्हें,
और सीखनी है समाधि तुम्हें,
तो मत कर तू बर्बाद समय- बस गीता को पढ़।
यदि करना भगवद् दर्शन तुम्हें, और रहना है प्रसन्न तुम्हें,
तो मत कर तू बर्बाद समय- बस गीता को पढ़।
यदि सब कुछ है पाना तुम्हें, और आना कहीं न जाना तुम्हें,
तो मत कर तू बर्बाद समय- बस गीता को पढ़।
यदि गीता से जुड़ जाओगे, अपने में ईश्वर पाओगे,
न इधर-उधर भरमाओगे, जा गोविन्द से मिल जाओगे,
बस, गीता गोविन्द से मिलाती है।

तो सज्जनों! आइये हम गीता जयंती के शुभ अवसर पर संकल्प लें कि हम नित्य गीता का श्रवण व स्वाध्याय करेंगे व दूसरों को भी प्रेरणा करेंगे. भगवान सबका मंगल करे, हम सभी गीता-ज्ञान को गुरुदेव की चरण-शरण जाकर समझेंगे और उस पावन पथ पर चलेंगे तो हमारा जीवन-मरण भी छूट जायेगा इस लोक की सभी समस्याओं-शंकाओं का भी निवारण हो जायेगा.

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश

जहाँ तक हो सके तीनों अवस्थाओं बाल, जवानी, वृद्धावस्था में भक्ति करनी चाहिए। भक्ति के द्वारा ही मनुष्य परम पद अविनाशी देश को पा सकता है।

गीता-ज्ञान

(पूज्यपाद स्वामी रामसुखदास जी महाराज)

परमात्मतत्त्व में क्रिया और पदार्थ- दोनों ही नहीं हैं. 'करना' भी क्रिया है और 'न करना' भी क्रिया है. करना और न करना भी क्रिया है. करना और न करना, पदार्थ और पदार्थ का अभाव- दोनों से हमारा कोई मतलब न हो. परमात्मा का भी चिन्तन न हो- **'न किंचिदपि चिन्तयेत्'** (गीता 6/25). गंगाजी हैं- इसका चिन्तन क्या करना? चिन्तन-रहित होने का सुख भी नहीं लेना है. न करना है, न पाना है. कुछ कर लें, कुछ मिल जाय- दोनों से उपराम होना है.

XXX XXX XXX

यह सभी सन्तों का अनुभव है कि सब कुछ भगवान् ही है. सब कुछ तू-ही-तू है. इसका ज्ञान कैसे हो? किसी को बुरा न समझें, किसी की बुराई न करें और किसी का भी बुरा न चाहें.

कहीं बुराई दिखे तो समझें कि भगवान् कलयुग की लीला कर रहे हैं. जैसा स्वरूप, वैसी लीला. बर्ताव सावधानी से करें; क्योंकि भगवान् की आज्ञा है- **'कर्मण्येवाधिकारस्ते'** (गीता 2/47). परन्तु भीतर से किसी को बुरा न समझें. जैसे स्नान के समय साबुन लगाये चेहरे को दर्पण में देखते हैं तो भद्दा रूप दिखायी पड़ता है, पर मन में अपना रूप वैसा नहीं समझते. ऐसे ही सबके भीतर साक्षात् परमात्मा हैं, पर ऊपर से अनेक तरह के वेष हैं. तात्पर्य है कि **बाहर से सावधानी रखो, पर भीतर से बुरा न समझो.**

किसी की बुराई न करें. व्यवहार यथायोग्य करते हुए भी भीतर से सबको भगवान् ही समझें. भीष्म जी कृष्ण को भगवान्-रूप से जानते थे, पर युद्ध के समय वे उनकी पूजा अपने बाणों से करते हैं. जैसा रूप, वैसी पूजा.

XXX XXX XXX

श्रीमद्भगवत्गीता ने **'वासुदेवः सर्वम'** को अधिक महत्व दिया है. मनुष्य जन्म ही बहुत जन्मों का अन्तिम जन्म है- **'बहूनां जन्मनामन्ते'** (गीता 7/19). अब मनुष्य यहाँ से जहाँ जाना चाहे, वहाँ जा सकता है- **'नरक स्वर्ग अपबर्ग निसेनी'** (मानस, उत्तर॰ 121/5). मनुष्य जन्म के बाद के जन्म का निर्णय भगवान् नहीं करते. मनुष्य यहाँ से मुक्त भी हो सकता है, भक्त भी हो सकता है और चौरासी लाख योनियों में भी जा सकता है.

01 दिसम्बर 2025 गीता जयंती पर विशेष

भगवान् ने मनुष्य जन्म दिया है तो साधन-सामग्री भी साथ में दी है. प्रत्येक परिस्थिति साधन-सामग्री है. परंतु मनुष्य इस साधन-सामग्री को भोग-सामग्री बना लेता है. **प्रतिकूल परिस्थिति एक नंबर की साधन-सामग्री है; क्योंकि इसमें पापों का नाश होता है और सावधानी आती है.**

सुख की इच्छा का नाम दुःख है. संसार में सुख भी दुःख है और दुःख भी सुख है- **'दुःखमेव सर्वं विवेकिनः'** (योगदर्शन 2/15). आज केवल सुख की तरफ ही दृष्टि है. यह दृष्टि महान् दुःख देने वाली है. **जहाँ सुख मिले, वहाँ समझे कि खतरा है !**

अनुकूलता-प्रतिकूलता में सुखी-दुःखी होना पाप है, तभी भगवान् ने कहा है-

सुखदुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ।
ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि।। (गीता 2/38)

'जय-पराजय, लाभ-हानि और सुख-दुःख को समान करके फिर युद्ध में लग जा. इस प्रकार (युद्ध करने से) तू पाप को प्राप्त नहीं होगा.

XXX XXX XXX

पिता ही पुत्ररूप से पैदा होता है. इसी तरह भगवान् ही संसाररूप से प्रकट हुए हैं. जैसे ब्राह्मण का लड़का ब्राह्मण ही होता है, ऐसे ही भगवान् से उत्पन्न होने वाले सब भगवान् के ही रूप हुए. **भगवान् का सबसे बढ़िया रूप कौन-सा है ? सबसे बढ़िया रूप है-संसार.** सब कुछ भगवान् का स्वरूप है. इतनी बात मान लो तो आपकी यहाँ की यात्रा सफल हो गयी! इसके लिये श्रवण, मनन आदि कुछ नहीं करना है. भगवान् सुलभ हैं, पर महात्मा दुर्लभ हैं! सबमें भगवान् को देखो, फिर भगवान् छिप नहीं सकते. यह बात भी भगवान् की कृपा से मिलती है! क्योंकि न तो आपके मन में थी, न मेरे मन में थी. भगवान् के मन में देने की है! यह खास भगवान् के हृदय की बात है.

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश

मनुष्य जो कार्य प्रारम्भ करे उसे अवश्य पूर्ण करे।

गीता भगवान् के द्वारा खुशी में, राजी होकर गाया हुआ गीत है. उपनिषद् साथ में होने से 'भगवद्गीता' हो गया, अन्यथा यह 'भगवद्गीतम्' है.

xxx xxx xxx

गीता में कर्मयोग, ज्ञानयोग और भक्तियोग- तीनों योगों का वर्णन आया है. अपनी मान्यता और बुद्धि की प्रधानता रहने के कारण टीकाकारों में मतभेद रहता है. तत्त्वप्राप्ति में सब एक हो जाते हैं. अतः साधना मार्गो की भिन्नता दोषी नहीं है. दूसरे का खण्डन करना दोषी है. दूसरे का खण्डन करने वाला वास्तव में अपना ही खण्डन करता है. सभी का प्रापणीय तत्त्व एक ही है. भूख और तृप्ति सबकी एक होती है, पर रुचि दो की भी समान नहीं होती.

हम अपनी बुद्धि से गीता को नहीं समझ सकते. अतः गीता की शरण हो जाना चाहिये. गीता में भगवान् ने समग्ररूप का वर्णन विशेषता से किया है. भगवान् के सभी रूप (निर्गुण-सगुण, निरकार-साकार) समग्र के अन्तर्गत आ जाते हैं. आपने भगवान् का जैसा स्वरूप पढ़ा, सुना या समझा हो उसी रूप का ध्यान और नामजप करें. **भगवान् कैसे हैं- यह भगवान् भी नहीं जानते कि मैं कैसा हूँ ! वहाँ कैसा-वैसा नहीं चलता. जैसा आप मानें, भगवान् वैसे ही हैं- 'ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्'** (गीता 4/11). बुद्धि प्रकृति को भी नहीं पकड़ सकती, फिर भगवान् को कैसे पकड़ सकती है? पर भगवान् चाहें तो हमारी बुद्धि में आ सकते हैं. हम भगवान् को जान तो नहीं सकते, पर उन्हें अपना मान सकते हैं. जैसे माँ को अपना मानें तो माँ पूरी-की-पूरी अपनी है, ऐसे ही भगवान् को अपना मानें तो भगवान् पूरे-के-पूरे अपने हैं. **अपने को भगवान् से अलग मान लेना और शरीर को संसार से अलग मान लेना गलती है.**

भगवान् को अपना मानने की जिम्मेवारी हमारी ही है. भगवान् ने तो हमें अपना मान ही रखा है.

xxx xxx xxx

सभी ग्रन्थों में गीता की वाणी विलक्षण है; क्योंकि यह भगवान् की वाणी है. भगवान् अनादि हैं. उनका सिद्धान्त बहुत विलक्षण है. वह सिद्धान्त है- **'वासुदेवः सर्वम्'** (गीता7/19). 'सब कुछ वासुदेव ही है'. **मन का लगना और न लगना- ये दो अवस्थाएँ तभी तक हैं, जब तक एक परमात्मा के सिवाय दूसरी सत्ता की मान्यता है. 'वासुदेवः सर्वम्'** का अनुभव करने के लिये मन-वाणी- शरीर से सबका आदर करें, सबका सुख चाहें. किसी का भी बुरा न चाहें.

यदि त्रिलोकी की सेवा करना चाहते हो तो बुराई न करो, न सोचो, न सुनो, न कहो. बुराई छोड़ने से भलाई स्वतः होगी. स्वतः होने वाली चीज ही सदा रहती है. सद्गुण-सदाचार नित्य हैं. आसुरी सम्पत्ति को हटाने से दैवी सम्पत्ति स्वतः प्रकट होगी. भलाई में जो कमी है, उसी का नाम बुराई है.

हमें संसार स्वतः-स्वाभाविक दीखता है. वास्तव में परमात्मा स्वतः-स्वाभाविक हैं, संसार नहीं. संसार परतः है. परमात्मा प्रमाण से सिद्ध नहीं होता, प्रत्युत प्रमाण उससे सिद्ध होते हैं. परमात्मा से प्रकाशित होने वाली वस्तु परमात्मा को कैसे प्रकाशित करेगी?

जब तक त्यागी है, तब तक त्याग नहीं हुआ. त्याग होने पर त्यागी नहीं रहता.

xxx xxx xxx

आजकल जो आत्महत्या आदि दुर्घटनाएँ हो रही हैं, इनका खास कारण है- अपनी संस्कृति का त्याग. **भोग भोगने की वृत्ति अधिक होने से ही आत्महत्या होती है.** भोग और संग्रह की वृत्ति बढ़ने का परिणाम यही होगा.

आजकल की संस्कृति को मानने वाले लोग मेरी बात सुनने के लिये तैयार नहीं है, जबकि मैं उनकी बात सुनने को तैयार हूँ. अपने विरोधी की बात सुनने से बड़ा लाभ होता है. विरोधी की बात चाहें मानें या न मानें, पर कम-से-कम उसे सुनना तो अवश्य चाहिये. जो मेरा विचार है, वही ठीक है- ऐसा मानते हुए दूसरे की बात न सुनें तो यह अपनी मूर्खता को सुरक्षित रखने का उपाय है.

पुरुषों में तो धन-संग्रह की अधिकता हो रही है और स्त्रियों तथा बच्चों में भोगों की अधिकता हो रही है. भोग न मिलें तो वे आत्महत्या कर लेंगे. भोगो को शरीर से भी अधिक कीमती मान लिया. परीक्षा में पास या फेल होना काम की चीज है, शरीर काम की चीज नहीं है- यह बुद्धि हो रही है. फेल होने पर आत्महत्या कर लेंगे. ऐसे लोग धर्म को क्या जानें? विदेशों में आत्महत्या ज्यादा होती थी. अब वही संस्कृति यहाँ आने से वही घटनाएँ यहाँ होंगी.

परमार्थ में लगे मनुष्य तो दूसरे की बात सुन लेते हैं, पर भोगों में लगे मनुष्य दूसरे की बात सुन नहीं सकते.

मन के माध्यम से ही भोग होता है- यह बात है ही नहीं. सुषुप्ति के सुख में क्या मन रहता है? नहीं रहता.

यदि आप अपने से निर्बल की रक्षा नहीं करते तो फिर भगवान् से अपनी रक्षा माँगना क्या न्याय है?

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी

**हम सांसारिक सम्बन्धियों व मित्रों के लिए व्यर्थ आँसू बहाते हैं।
प्रभु के विरह में गंगा जमुना बहानी चाहिए।**

गीता जयंती विशेष (01 दिसम्बर)

पावन श्रीमद्भगवद् गीता

विश्व वंदनीय ग्रन्थ पुनीता।
पावन श्रीमद्भगवद् गीता।।

पावन कुरुक्षेत्र की भूमि, नित नत मस्तक नमामी।
प्रकट हुई जहाँ संहिता– पावन श्रीमद्भगवद् गीता।।

गीता ग्रन्थ के गोविंद गायक, महाभारत का है उन्नायक।
श्रीमुख से हुई निःसृता– पावन श्रीमद्भगवद् गीता।।

गीता ग्रन्थ है सबसे आला, इक इक अक्षर है निराला।
पढ़ देखो तुम मीता– पावन श्रीमद्भगवद् गीता।।

गीता ज्ञान है सबसे ऊँचा, स्वयं ईश्वर ने है सींचा।
चित्त में जगाती चैतन्यता– पावन श्रीमद्भगवद् गीता।।

ज्ञान भक्ति कर्म की आख्या, इसकी इसमें विशद् व्याख्या।
सबसे सुंदर सुधा सरिता– पावन श्रीमद्भगवद् गीता।।

गीता ज्ञान शोक मिटाता, मोह ममता अहंकार हटाता।
इसी जीवन की निरस्ता– पावन श्रीमद्भगवद् गीता।।

गीता ज्ञान की यही विशेषता, अज्ञानजनित सब मिटे भयता।
धन्य धन्य करती सब वक्ता श्रोता– पावन श्रीमद्भगवद् गीता।।

गीता पढ़ोगे, आगे बढ़ोगे, गीता सुनोगे, सुखी बनोगे।
सफल जीवन की प्रणेता– पावन श्रीमद्भगवद् गीता।।

आओ गीता गायें हम, जीवन सफल बनायें हम।
'दिलीप' देती दिव्यता– पावन श्रीमद्भगवद् गीता।।

गीता स्वाध्याय

सब संतों की सुंदर राय।
करें गीता का स्वाध्याय।।

श्रद्धा से करें गीता गायन, नित्य करें यह पाठ पारायन।
श्लोक कंठस्थ हो जाय– करें गीता का स्वाध्याय।।

गीता अध्ययन सुख प्रदाता, ज्ञान दे अज्ञान मिटाता।
तू हर पल इसको गाय– करें गीता का स्वाध्याय।।

गीता को है जाना जिसने, जीवन्मुक्ति पाई उसने।
वो आनन्द रहा समाय– करें गीता का स्वाध्याय।।

गीता अनभिज्ञ दुःखी अज्ञानी, प्रसन्न रहता गीता ज्ञानी।
राह देतीं सुलझाय– करें गीता का स्वाध्याय।।

गीता में सब समाधान है, सब ग्रन्थों में ये प्रधान है।
ये ज्ञानियों की राय– करें गीता का स्वाध्याय।।

गीता में हैं विलक्षण साधन, गीता का ही करें आराधन।
पढ़ें प्रत्येक अध्याय– करें गीता का स्वाध्याय।।

गीता का नित्य पाठ करे जो, जन्म–मरण का कष्ट हरे सो।
पल में पार हो जाय– करें गीता का स्वाध्याय।।

गीता ग्रन्थ का आराधक, 'दिलीप' है स्वाध्यायी साधक।
सदा करे सहाय– करें गीता का स्वाध्याय।।

गीता पढ़े बिना ज्ञान नहीं

श्रद्धा के बिना दान नहीं होता।
निर्विषय हुए बिना ध्यान नहीं होता।।
किताबें कितनी भी कोई पढ़ ले, लेकिन।
गीता को पढ़े बिना ज्ञान नहीं होता।।

गीता महिमा दोहे

कर्म उपासना ज्ञान पुनि योग यज्ञ तप ध्यान।
सब साधन बतलाये हैं गीता में भगवान।।

अठारह अध्याय में सात सौ हैं श्लोक।
पारायण कर प्रेम से, बने लोक-परलोक।।

श्रीकृष्ण व अर्जुन का, सुंदर है संवाद।
पढ़े सुने जो ध्यान से, मिट जाये वाद-विवाद।।

दुनिया में इससे बढ़ा, ऊँचा नहीं है ज्ञान।
गीता में तुम पाओगे, सबका सब समाधान।।

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

जहाँ जन्म है, वहाँ मृत्यु। जहाँ उत्पत्ति है, वहाँ विनाश। मृत्यु का पीछा उसी दिन से हमारे साथ शुरू हो जाता है, जब से हमारा जन्म है। मृत्यु भी कई प्रकार की होती है। रोग भी मृत्यु है, गरीबी भी मृत्यु है और अभिमान भी मृत्यु है।

प्रेरणास्पद प्रसंग

गीता जन्म-मरण को सुधार देती है

एक बार, श्री अमरापुर दरबार टण्डेआदम सिंध में आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज संत मण्डली सहित विराजमान थे. एक सज्जन दौड़ता-दौड़ता आचार्यश्री के पास आया, प्रणाम करके कहने लगा- साईं! हमें वो पुस्तक दो, जो आदमी को मारती है. उस भक्त की ऐसी अटपटी बात सुनकर वहाँ उपस्थित संत-महात्मा हँसने लगे; क्योंकि वो बात ही ऐसी कर रहा था. परन्तु आचार्यश्री उस प्रेमी के सरल स्वभाव से परिचित हो गये और उसके भाव को भी समझ गये.

आचार्य जी ने कहा- भाई, आप लोगों ने इसके भाव को नहीं समझा, ये श्रीमद्भगवतगीता के लिए कह रहा है. परन्तु वो पुस्तक किसी को मारती थोड़े ही है वो तो जीव को इस भंयकर भवसागर से तारती है. श्रीमद्भगवतगीता तो जन्म- मरण को सुधार देती है. आचार्यश्री ने उस सज्जन को अपने सरल स्वभाव से ऐसा समझाकर विदा किया.

श्रीकृष्ण जी का अर्जुन को स्वकर्म का उपदेश

अपना धर्म देखकर भी तू
इस अधीरता को मत धार।
धर्मयुद्ध सम और नहीं कुछ
क्षत्रिय का है जग में सार।।
स्वयं - प्राप्त यह खुला हुआ है
युद्ध - सुरूप स्वर्ग का द्वार।
भाग्यवान क्षत्रिय ही इसको
पाते हैं, हे पाण्डु कुमार।।
मर जाने से स्वर्ग मिलेगा,
जय होने से भूतल राज।
इससे निश्चय ही भारत!
तू हो जा खड़ा युद्ध को आज।।
विजय - पराजय, हानि - लाभ,
सुख - दुःख सभी को जान समान।
फिर प्रबृत्त हो जा तू रण में,
पाप नहीं होगा मतिमान।।

भगवत् गीता पढु तूं प्यारा..

थलुः भगवत् गीता पढु तूं प्यारा,
पढ़दे सुणंदे शान्ति अचे थी, मन जा मिटनि मूंझारा..

1. गीता जहिड़ो पुस्तकु बियो को, लोक टिन्ही में नाहे ।
मन मोहन जे मुंहं जा मोती, जंहिंमें भरियल सारा..।।
2. गीता पढु तूं गीता सुणु तूं, गीता लिखु तूं हथ सां ।
गीता गीता मुंहं सां चउ तूं गीता ज्ञान वीचारा..।।
3. गीताऊँ थी केई जगत में, शंकर गीता आदिक ।
भगवत् गीता तिनि सभिनी खां, ऊँची समिझ उदारा..।।
4. वेदनि रुपी सागर अंदरि, गीता अमृतु आहे ।
सन्त सभा मिल अमृतु कढियो, पीअनि देव दुलारा..।।
5. जीअरे मति दे॒, मुए गति दे॒, भूत प्रेत खां राखे ।
कहे टेऊँ कुलु पितर उधारे, गीता मुक्ति दुआरा..।।

गीता का सन्देश - सबमें भगवद् - दृष्टि

सब भूतों में स्थित आत्मा है, आत्मा में है भूत अशेष।
योग युक्त सबमें समदर्शी योगी की यह दृष्टि विशेष।।
जो मुझको सर्वत्र देखता, मुझमें देखे सारा दृश्य।
उसके लिये अदृश्य नहीं मैं, वह भी मुझसे नहीं अदृश्य।।
सब भूतों में स्थित मुझको जो भजता है रख एकीभाव।
वह योगी रह सब प्रकार से मेरे हित करता बर्ताव।।
जो अपनी ही भाँति देखता है सबमें सुख - दुःख समान।
अर्जुन! वह माना जाता है योगी सबसे श्रेष्ठ महान्।।

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश

अपने स्वास भगवत भजन में व शरीर परोपकार व धर्म में लगा लो।
क्योंकि काल के द्वारा वैसे ही एक न एक दिन मारे जाओगे।

रामायण तत्त्वार्थ

तीर्थ का महात्मय

कितने ही लोग गंगा-किनारे, नर्मदा-किनारे जाते हैं, परन्तु बहुत ठंड पड़ती हो, वर्षा पड़ती हो तो गंगाजी को, नर्मदाजी को वन्दन करते नहीं उनमें स्नान भी करते नहीं. तीर्थ जाकर जो तीर्थदेव का वन्दन नहीं करे, स्नान न करे वह तीर्थ का अपमान करता है. किसी भी तीर्थ में जाओ तो प्रथम तीर्थ-देवता का वन्दन करो. उस पीछे स्नान करो. तीर्थ में उपवास करो. उपवास करने से शरीर में शुद्धि होती है, शरीर में सात्विक भाव जाग्रत होता है, पाप भस्म होता है. तीर्थ में भूमि पर शयन करो. धर्मशाला की खटिया पर सोओ नहीं. जिस खटिया पर किसी ने पाप किया होगा उस पर सोने से वह तुमको भी लगेगा. स्थान को पवित्र बनाओ, अपना वस्त्र बिछाओ, माला करो और पीछे सो जाओ. तीर्थ में मौज-मजा न करो. तीर्थ में केवल घूमने-फिरने की भावना से न जाओ. तीर्थ में क्रोध नहीं किया जाता, किसी की निन्दा नहीं की जाती. कितने ही लोग तो तीर्थ में जाकर पाप करते हैं.

अन्यक्षेत्रे कृतं पापं तीर्थक्षेत्रे विनश्यति।
तीर्थक्षेत्रे कृतं पापं वज्रलेपो भविष्यति।।

अन्यत्र किया हुआ पाप तीर्थ जाकर धुल जाता है परन्तु तीर्थ में जाकर जो पाप करता है, उसको बहुत भारी सजा मिलती है. एक-एक तीर्थ में एक पाप छोड़ो, एक-एक त्याग बढ़ाओ. परमात्मा के लिए अतिशय प्रिय वस्तु का त्याग करोगे तो परमात्मा को दया आयेगी. तीर्थ में जाकर काम-क्रोध जैसे विकार छोड़ो. तीर्थ में ब्रह्मचर्य का पालन करो, सत्संग करो, तप और संयम से पवित्र होकर भावना से तीर्थ में जाओ.

रसोई

आजकल की माताओं को तो रसोई बनाना भी बोझा लगता है. वे बाजार से गाँठिया-सेब इत्यादि कुछ मँगा लेती हैं और उससे काम चला लेती हैं. बाजार का भूंसु (सेब) बहुत खाया जाय तो उससे इनके मगज में भी भूसा ही भर जाता है, बुद्धि बिगड़ जाती है. बाजार का खाना कदाचित् स्वच्छ हो सकता है परन्तु शुद्ध होता नहीं. परन्तु आजकल के लोग रूप न बिगड़े, इसकी सुरक्षा करते हैं. कपड़ा न बिगड़े इसका ध्यान रखते हैं, परन्तु मन, बुद्धि न बिगड़े, उसके लिए कोई सावधानी रखते नहीं है.

पावन प्रसंग

रक्षा का भार

एक बार राजस्थान में भीषण अकाल पड़ा. एक संत ने अकालपीड़ितों की सहायता के लिए कुछ धनाढ्य भक्तों को अनाज वितरित करने की प्रेरणा दी. मार्ग में डाकुओं का स्थान पड़ता था. डाकुओं का सरदार माधवसिंह भेष बदलकर उस दयालु व्यापारी के समक्ष पहुँचा और उससे बोला- "यह डाकू माधवसिंह का क्षेत्र है. आपको यहाँ से गुजरते डर नहीं लगता." यह सुनकर वह व्यापारी बोला- "हम ईश्वर की प्रेरणा से यह अनाज अकालपीड़ितों में बाँटने जा रहे हैं. इसकी रक्षा का भार उसी पर है. वह किसी के मन में इसे लूटने की प्रेरणा क्यों पैदा करेगा?" यह सुनकर डाकू माधवसिंह का हृदय आत्मग्लानि से भर उठा. उसने सोचा कि ये सेवाभावी लोग भूख से पीड़ित लोगों की सहायता करने जा रहे हैं और मैं पापकर्म में लिप्त हूँ. वह भी उन दयालु व्यापारी के साथ सेवाकार्य में जुट गया.

त्याग से मिलता है ऊँचा पद

राजा बृजेन्द्र प्रतापी एवं धर्मात्मा थे, परन्तु उनके कोई सन्तान नहीं थी. उन्हें इस बात की सदा चिन्ता रहती थी. विद्वानों के परामर्श पर उन्होंने पुत्रेष्टि यज्ञ सम्पन्न कराया. यज्ञ की समाप्ति पर आकाशवाणी हुई- "राजन्! तुम्हारे भाग्य में स्वयं का पुत्र नहीं है, अतः तुम किसी सत्पात्र को अपना दत्तक पुत्र बना लो." यह सुनकर राजा सत्पात्र की तलाश में निरत हो गए. एक दिन वे अपने राजप्रसाद की खिड़की से बाहर देख रहे थे कि उन्होंने एक गरीब युवक को पत्तल में भोजन करते देखा. ऐसा लग रहा

था कि उसे बहुत दिनों बाद भोजन मिला है.

तभी उन्होंने देखा कि एक वृद्ध व्यक्ति वहाँ पहुँचा, जो कि क्षुधा से पीड़ित व अशक्त लग रहा था. यह देखकर उस युवक ने अपना भोजन उस वृद्ध व्यक्ति के सुपुर्द कर दिया. उसका त्याग देख राजा ने उसको बुलवाया और उसे एक ऊँचा पद देने का प्रस्ताव रखा. वह युवक बोला- "महाराज! जीवन का सार तो त्याग एवं निस्पृहता में है. पद का मैं क्या करूँगा?" यह सुनकर राजा को लगा कि उनकी सत्पात्र की खोज पूर्ण हो गई है और उन्होंने उसे अपना दत्तक पुत्र बना लिया.

पर उपकार से मिलती है कीर्ति

घटना सत्रहवीं शताब्दी की है. उत्तरी वर्जीनिया में कुछ मित्र नदी किनारे बैठे थे कि उन्होंने एक स्त्री के रोने-चिल्लाने की आवाज सुनी. उन्होंने देखा कि उस स्त्री का बच्चा नदी में बहा जा रहा है, परंतु कोई उसे बचाने नहीं कूद रहा है. यह देखकर उनमें से एक युवक तुरंत उफनती नदी में कूद गया और अपनी जान पर खेलकर उस बच्चे को बचा लाया.

उसके इस शौर्य को देखकर वह महिला बोली- "मैं तुम्हारे इस उपकार का बदला तो नहीं चुका सकती, लेकिन मैं भगवान से यह प्रार्थना तो कर ही सकती हूँ कि तुम्हारे इस पराक्रम का परिणाम तुम्हारी दिग्दिगंत कीर्ति के रूप में तुम्हें मिले." संभवतया यह उस महिला के अन्तर्मन से निकली सच्ची पुकार का परिणाम ही था कि वह नवयुवक, जिसका नाम जार्ज वाशिंगटन था- आगे चलकर अमेरिका का राष्ट्रपति बना.

अपनी भूल का भान

एक युवक एक संत के पास अपनी व्यथा लेकर पहुँचा कि वह अनेकों प्रयत्न करने के बावजूद स्थिरता से ध्यान नहीं लगा पाता है. संत ने उसे अपने सामने बैठकर ध्यान करने को कहा. युवक आँखें बंद करके वहीं बैठ गया. इसी बीच संत ने झाड़ू लगाने वाली स्त्री को इशारा किया तो उस स्त्री ने अपनी झाड़ू उस युवक से छुआ दी. यह देखकर वह युवक आग बबूला हो उठा और लड़ने को उतारू हो गया. तो संत बोले- "वत्स! ध्यान करने के लिए अंदर के आवेगों का शान्त होना जरूरी है. यदि छोटी-सी बात तुम्हें इतना उद्वेलित करती है तो मन को स्थिर कैसे रख पाओगे." युवक को अपनी भूल का अहसास हुआ और वह अपने दोषों के परिमार्जन में जुट गया.

–साधक,
श्री अमरापुर दरबार (डिब), जयपुर

सद्गुरु साईं टेऊँराम जी महाराज द्वारा रचित

स्वास्थ्य सम्बन्धी दोहे

1. कह टेऊँ जो जगत में, पालत प्राकृत नेम।
   होय निरोगी मनुष सो, पावत निश्चय क्षेम।।
2. जागन शयन विहार पुन खान पान स्नान।
   टेऊँ करत जो नेम से, पावत सो कल्यान।।
3. कर्म करत जो नेम से, सो जन होत निरोग।
   टेऊँ पुन बलवान हो, भोगत आनन्द भोग।।
4. जिसका कोई नेम नहीं, कह टेऊँ जग माहिं।
   तांके जीवन स्वास्थ्य का, कोय भरोसा नाहिं।।
5. नेम बिना जो चलत है, टेऊँ उल्टी चाल।
   सो निज स्वास्थ्य नाश कर, भोगत रोग विशाल।।
6. सब रोगों की औषधी, टेऊँ है व्यायाम।
   कसरत कर नित नेम से, पाओ सुख विश्राम।।
7. समय समय में कीजिये, कह टेऊँ उपवास।
   रोग समय में चेत कर, हो उपवासी खास।।
8. विषय त्याग अन्न त्याग को, कहत मुनी उपवास।
   कह टेऊँ उपवास निज, हो चित्त आतम पास।।
9. रोगी तन को देख के, टेऊँ भोजन त्याग।
   होय अरोगी देह जब, युक्ति सहित कर राग।।
10. कह टेऊँ भोजन समय, कीजे शुद्ध वीचार।
    तांसे निर्मल होत मन, उठत न विषय विकार।।

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी

प्रतिदिन प्रात: काल को उठकर भगवान के आभार मानें कि उसने आपको आज नया जन्म दिया है। मन में संकल्प करें कि आज कोई भी पाप-कर्म नहीं करूँगा और शुभ कर्म ही करूँगा।

श्रीमद्भागवत् कथांश

माता-पिता की सेवा

माता-पिता की सेवा महान् पुण्य है. अनेक यज्ञों के करने वाले को जो पुण्य नहीं मिलता वह वृद्ध माता-पिता की सेवा करने वाली सन्तान को अनायास ही प्राप्त हो जाता है. माता-पिता की अनन्य भाव से सेवा करने वाले के ऊपर परमात्मा बहुत कृपा करते हैं, इनके घर प्रत्यक्ष पधारते हैं. पुण्डरीक की कथा तुम जानते हो. पुण्डरीक ने प्रभु की सेवा नहीं की थी. पुण्डरीक स्मरण श्रीकृष्ण का करता था और सेवा माता-पिता की करता था. पुण्डरीक भगवान के दर्शन करने नहीं गया, पुण्डरीक के दर्शन करने भगवान स्वयं उनके घर पधारे थे. पुण्डरीक की मातृ-पितृ भक्ति से प्रसन्न होकर प्रत्यक्ष द्वारकानाथ पुण्डरीक के घर आये थे. पुण्डरीक उस समय माता-पिता की सेवा कर रहे थे. प्रभु ने उनसे कहा कि 'मैं आया हूँ'. पुण्डरीक ने कहा- 'महाराज! मैं आपकी वन्दना करता हूँ. इस समय मैं माता-पिता की सेवा में व्यस्त हूँ. माता-पिता की सेवा के फलस्वरूप आप मिले हो, इसलिए माता-पिता की सेवा प्रथम है. आप तनिक बाहर खड़े रहो.

माता-पिता की सेवा करने वाले में इतनी शक्ति आ जाती है कि वह ईश्वर को भी खड़े रहने के लिए कह सकता है. प्रभु ने थोड़ी परीक्षा की. पुण्डरीक से बोले- 'अनन्तकोटिब्रह्माण्ड के अधिनायक लक्ष्मी के पति तेरे घर आये हैं.' पुण्डरीक ने कहा, 'आप पधारे. यह बहुत अच्छी बात है. मैं आपका वन्दन करता हूँ, परन्तु इस समय आपकी सेवा करने की मुझे फुरसत नहीं.'

प्रभु ने कहा, 'तू मेरी सेवा करता नहीं तो मैं यहाँ से चला जाऊँ.'

पुण्डरीक ने कहा, 'आपकी मर्जी, भले ही आप जाओ.'

पुण्डरीक को विश्वास है कि मैंने माता-पिता की सेवा छोड़ी नहीं. मैं माता-पिता की सेवा करता हूँ. इसलिये भगवान भले ही चले जायें, परन्तु ठाकुरजी को वापिस यहीं आना पड़ेगा. पुण्डरीक ने ठाकुर जी को उत्तर दिया, 'भले ही आप जाओ, परन्तु आपको वापिस यहीं आना पड़ेगा. मैं माता-पिता की ऐसी सेवा करता हूँ कि तुमको दौड़ते हुए यहीं वापिस आना पड़ेगा.'

श्रीकृष्ण जगत का आकर्षण करते हैं परन्तु माता-पिता की सेवा करने वाला तो परमात्मा का भी आकर्षण करता है और कहता है, 'आज जाओ तो वापिस फिर आना पड़ेगा.' प्रभु तो भक्ति के अधीन हैं. पुण्डरीक ने प्रभु को खड़े रहने के लिए एक ईंट दे दी थी. भगवान ईंट के ऊपर खड़े रहे और पुण्डरीक की परीक्षा करते रहे. पुण्डरीक ने माता-पिता की सेवा का काम छोड़ा नहीं. प्रतीक्षा करते हुए खड़े रहने से भगवान को थकान हुई तो कमर पर हाथ रखना पड़ा. आज भी पण्ढरपुर में पाण्डुरँग भगवान कमर पर हाथ रखे हुए ईंट पर खड़े हैं. माता- पिता की सेवा की यह महिमा है.

एकादशी

एकादशी व्रत का प्रारम्भ किसी भी एकादशी से किया जा सकता है. इसके लिये उत्पन्ना एकादशी की प्रतीक्षा करने की आवश्यकता नहीं है. कोई भी शुभकार्य जितनी जल्दी हो सके प्रारम्भ कर देना चाहिये.एकादशी के दिन अन्न का आहार करना निषिद्ध है, विशेषकर चावल तो नहीं ही खाना चाहिये.

एकादशी का व्रत कई प्रकार से किया जाता है. सर्वोत्तम विधि निर्जल व्रत का है. परन्तु इसका गृहस्थ तथा सौभाग्यवती-पुत्रवती स्त्री के लिये निषेध वचन भी है. यदि कोई करना चाहे तो तुलसीदल तथा भगवान् का चरणामृत लेने से इस दोष का परिहार हो जाता है.

कोई निर्जल व्रत न करे तो एक बार दूध, ठंडाई, बेल अथवा नीबू आदि का शर्बत या अन्य कोई फलाहारी पेय पदार्थ लेकर व्रत कर सकते हैं. इसके बाद एक बार फलाहार, फल, दूध लेकर व्रत किया जा सकता है. इससे भी संतुष्टि न हो तो कूटू (फाफर) अथवा सिंघाड़ा आदि को रोटी या पूरी, रामदाना, छेना, खोचा, आलू, शकरकन्द तथा अन्य फलाहारी सामान का प्रयोग व्रत में किया जा सकता है. केवल एक बार फलाहार करने से व्रत पूरा होता है. दूसरी बार फल दूध ले लेने से व्रत पूर्ण नहीं होगा केवल एकादशी के दिन अन्न खाने के दोष से बच सकते हैं. जो लोग एक बार फलाहार कर व्रत करने में सक्षम न हों उन्हें कम से कम एकादशी के दिन अन्न तो नहीं ही खाना चाहिये. प्रत्येक एकादशी के लिये कोई अलग अलग विशेष व्यवस्था नहीं है. सभी एकादशियों में ऊपर लिखे आहार लिये जा सकते हैं. प्रायः कई बार एकादशी दो दिन भी हो जाती है. पहले दिन की एकादशी स्मार्तानाम् अर्थात् गृहस्थों के लिये तथा दूसरे दिन की एकादशी वैष्णवनाम् साधुजनों के लिये है. हम लोगोंको पहले दिन की एकादशी करना चाहिये.

सद्‌गुरु हरिदासराम वचनावली

मरता तो शरीर है आत्मा नहीं। वह तो स्वयं ज्ञान स्वरूप है।

भगवान से मिलने की हो व्याकुलता

एक राजा सायंकाल को अपने राजमहल की छत पर टहल रहा था. अचानक उसकी दृष्टि महल के नीचे बाजार में घूमते हुए एक सन्त पर पड़ी. संत तो सदैव प्रभु नाम की मस्ती में खोये रहते हैं- उनके लिए चाहे हाट बाजार हो या मंदिर वे तो नाम की धुन में रहते हैं.

राजा ने उनको देखकर महसूस किया कि संत बाजार में इस प्रकार आनन्द से भरे चल रहे हैं जैसे वहाँ उनके अतिरिक्त और कोई है ही नहीं, न किसी के प्रति राग न किसी से द्वेष.

संत की यह मस्ती राजा को इतनी भा गई कि शीघ्र ही उनसे मिलने को व्याकुल हो गये. उन्होंने अपने सेवकों से कहा- "इन्हें तत्काल लेकर आओ."

सेवकों को कुछ न सूझा तो उन्होंने एक मोटा मजबूत रस्सा महल के ऊपर ऊपर से ही नीचे लटका दिया और उन संत जी को उसमें फँसाकर ऊपर खींच लिया. और चंद मिनटों में ही संत राजा के सामने थे. राजा ने सेवकों द्वारा इस प्रकार लाये जाने के लिए संत जी से क्षमा माँगी.

संत ने सहज भाव से क्षमा कर दिया और पूछा- "ऐसी क्या शीघ्रता आ पड़ी महाराज जो मुझे रस्सी से खिंचवा लिया."

राजा ने कहा, "एक प्रश्न का उत्तर पाने के लिए मैं अचानक ऐसा बैचेन हो गया कि आपको यह कष्ट देना पड़ा."

संत मुस्कराए और बोले- "ऐसी व्याकुलता थी अर्थात् कोई गूढ़ प्रश्न है, बताइए क्या प्रश्न है?"

राजा ने कहा- "मेरे मन में यह है कि भगवान शीघ्र कैसे मिलें, मुझे लगता है कि आप ही इसका उत्तर देकर मुझे संतुष्ट कर सकते हैं. कृपा कर मार्गदर्शन करें."

संत जी ने कहा- "राजन्! इस प्रश्न का उत्तर तो तुम भली भाँति जानते ही हो, बस समझ नहीं पा रहे. दृष्टि बड़ी करके सोचो, तुम्हें पल भर में इसका उत्तर मिल जाएगा."

राजा ने कहा- "यदि मैं सचमुच इस प्रश्न का उत्तर जान रहा होता तो मैं इतना व्याकुल क्यों होता और आपको ऐसा कष्ट क्यों कर देता? मैं व्यग्र हूँ, आप संत हैं सबको उचित राह बताते हैं. " राजा एक प्रकार से गिड़गिड़ा रहे थे और संत चुपचाप उनको सुन रहे थे जैसे उन्हें उस पर दया ही न आ रही हो.

अचानक संत बोल पड़े- "सुनो अपनी उलझन का उत्तर."

संत बोले- "यदि मेरे मन में तुमसे मिलने का विचार आता तो कई अड़चनें आतीं और बहुत देर भी लगती. मैं आता तुम्हारे दरबारियों को सूचित करता, वे तुम तक संदेश लेकर जाते. यदि तुम फुर्सत में होते तो हम मिल पाते और कोई जरूरी नहीं था कि हमारा मिलना सम्भव भी होता या नहीं. परंतु जब तुम्हारे मन में मुझसे मिलने इतना प्रबल रूप से आया तो सोचो कितनी देर लगी मिलने में? तुमने मुझे अपने सामने प्रस्तुत कर देने के पूरे प्रयास किये. इसका परिणाम यह रहा कि घड़ी भर से भी कम समय में तुमने मुझे प्राप्त कर लिया.

हे राजन्! इसी प्रकार यदि भगवान् को पाने की व्याकुलता हो तो भगवान् तत्काल तुम्हारे सामने आ जाएँगे"

राजा ने पूछा- "परंतु भगवान् के मन में हमसे मिलने का विचार आए तो कैसे और क्यों आए?"

संत बोले- "तुम्हारे मन में मुझसे मिलने का विचार कैसे आया?"

राजा ने कहा- "जब मैंने देखा कि आप एक ही धुन में चले जा रहे हैं और सड़क, बाजार, दुकानें, मकान, मनुष्य आदि किसी की भी तरफ आपका ध्यान नहीं है, उसे देखकर मैं इतना प्रभावित हुआ कि मेरे मन में आपसे तत्काल मिलने का विचार आया."

संत बोले- "यही तो तरीका है भगवान को प्राप्त करने का. राजन्! ऐसे ही तुम एक ही धुन में भगवान् की तरफ लग जाओ. अन्य किसी की भी तरफ मत देखो, उनके बिना रह न सको, तो भगवान् के मन में तुमसे मिलने का विचार आ जायगा और वे तुरंत मिल भी जावेंगे."

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश

गुरूदेव से प्रार्थना करें - अब मेरा उद्धार करो
ताकि अन्तिम क्षणों तक मेरा मन नाम में लगा रहे व सांसारिक इच्छा का उदय न हो।

पावन प्रसंग

क्षणिक लोभ

एक बार एक स्त्री ने गुरु नानकदेव से प्रार्थना की, "महाराज जी! आप हमारे घर पधार कर कृतार्थ करें." जब नानक जी उसके घर गए तो वह एक कटोरे में हंड़िया से दूध डालने लगी, तब सारी-की-सारी मलाई कटोरे में गिर गई. यह देख उसके मुख से "अरे, अरे" शब्द निकल पड़े. बहरहाल, दूध में चीनी डालकर उसने वह कटोरा गुरु नानकदेव के सामने रख दिया. गुरुनानक उस स्त्री को उपदेश देने लगे. स्त्री ने सोचा कि शायद दूध गरम होगा, इसलिए वे दूध नहीं पी रहे हैं, किंतु उपदेश समाप्त होने के बाद भी जब उन्होंने दूध की ओर ध्यान नहीं दिया तो वह बोली, "महाराज, दूध पी लीजिए." गुरु नानकदेव ने पूछा, "इसमें क्या है?" स्त्री ने कहा, "दूध और चीनी." गुरु ने कहा, "दूध और चीनी के अलावा इसमें तुम्हारी 'अरे-अरे' मिली है, इस कारण मैं इसे नहीं पी सकता." यह सुन उसे पश्चाताप हुआ और मन में उठे क्षणिक लोभ के विचारों के लिए क्षमा माँगी और गुरुनानक देव को दूसरा दूध दिया.

समस्या का हल

एक बार एक संत से किसी ने पूछा, "महाराज! आजकल हवा, पानी, मिट्टी और विचारों तक में प्रदूषण इतना अधिक बढ़ गया है कि जीना मुश्किल है. ऐसे में हमें क्या करना चाहिए?" संत जी बोले, "तुम रात को आना तभी मैं कुछ बता पाऊँगा." जब वह आदमी रात को उनके पास पहुँचा तो उसने देखा कि वहाँ बिल्कुल अंधेरा है. उसने कहा, "दीपक तो जलाइये महाराज ताकि कुछ रोशनी हो."

संत जी बोले, "उजाला तो मैं भी करना चाहता हूँ, लेकिन समस्या तो यह है कि दीपक को कौन जलाए?" वह बोला, "ठहरिए मैं जला देता हूँ." संत जी बोले, "यदि तुम दीपक जलाकर मेरे यहाँ रोशनी कर सकते हो तो फिर प्रतिदिन यज्ञ, हवन और सद्विचारों का प्रसार करके समाज से प्रदूषण कम करने का प्रयास क्यों नहीं करते?" उस व्यक्ति को अपने प्रश्न का उत्तर मिल गया था.

सच्चाई-ईमानदारी

एक गाँव में एक व्यापारी किसी कार्य से पहुँचा. उसे हथौड़े की आवश्यकता पड़ी तो उसने गाँव के लोहार से हथोड़ा बनाने को कहा. वह हथौड़ा व्यापारी को इतना अच्छा लगा कि उसने नगर लौटकर सबसे उसकी कार्य कुशलता की प्रशंसा की. उसकी प्रशंसा सुनकर अनेक लोग लोहार के पास हथौड़ा बनवाने आने लगे. शीघ्र ही लोहार के कार्य की शोहरत चारों ओर फैल गई. कुछ दिनों बाद शहर से एक बहुत बड़ा सौदागर आया और लोहार से बोला- "मैं तुम्हें शेष सबकी तुलना में डेढ़ गुना दाम दूँगा, लेकिन शर्त यह होगी कि भविष्य में तुम सारे हथौड़े केवल मेरे लिए बनाओगे. उन्हें किसी और को नहीं बेचोगे."

सौदागर की शर्त सुनकर लोहार बोला- "मुझे अपने कार्य का जितना दाम मिल जाता है, उससे मैं संतुष्ट हूँ. अपने परिश्रम का मूल्य मैं स्वयं ही निर्धारित करना चाहता हूँ. आप मुझे जितने पैसे देंगे, उससे दो गुना खरीददारों से वसूलेंगे. मेरे लालच का बोझ गरीबों पर पड़ेगा; जबकि मैं यह चाहता हूँ कि उन्हें मेरे कौशल का लाभ मिले. इसलिए आपका यह प्रस्ताव मैं स्वीकार नहीं कर सकता."

सच्चाई और ईमानदारी महान शक्तियाँ हैं. यदि किसी व्यक्ति में कुशलता के अतिरिक्त ये दोनों गुण मौजूद हैं तो उसे किसी प्रकार का प्रलोभन अपने सिद्धांतों से डिगा नहीं सकता.

संकलित

प्रेरक प्रसंग

भक्त नामदेव जी की श्रद्धा भक्ति

संत नामदेव जी बचपन में अपने ननिहाल में रहते थे, इनके नाना जी का नाम बामदेव था, जो ठाकुर जी के परम वैष्णो भक्त संत थे। बचपन में नामदेव जी काठ के खिलौनों एवं मिट्टी के खिलौनों से खेला करते थे लेकिन इनका खेल साधारण बच्चों की तरह नहीं था।

श्री नामदेव जी उन खिलौनों के साथ में जिस प्रकार से कोई भक्त पूजा करता है भगवान को नहलाता है, उनका ध्यान करता है आसन देता है और फिर उनका भोग लगाता है इसी प्रकार से यह खेला करते थे और अपने नाना जी को देखते थे, कि नाना जी जो ठाकुर जी को दूध का भोग लगाते थे, वही दूध संत नामदेव जी को प्रसाद रूप में मिलता था।

नामदेव जी अपने नाना की भक्ति देखकर बचपन से ही बार बार नाना जी से कहते थे कि नाना जी भगवान की सेवा मुझे दे दीजिए ! नाना जी कहते थे ठीक है थोड़ा बड़ा हो जाएगा तो दे दूंगा, इस प्रकार से कुछ दिन बीता, तो एक दिन फिर नामदेव जी अपने नाना से अड़ गए और कहने लगे नाना जी अब तो मुझे ठाकुर जी की सेवा दे दीजिए !

इस बात पर नाना जी ने कहा नामदेव कुछ दिन बाद मुझे तीन दिन के लिए किसी गांव में किसी काम से मुझे जाना है, यदि तुम उन तीन दिनो में अच्छे से ठाकुर जी की सेवा की उनको दूध का भोग लगाना और जो बचे तो स्वयं का भोग लगाना यदि तुम अच्छे से तीन दिन सेवा कर लोगे तो आने पर ठाकुर जी से पूछ कर तुम्हें हमेशा के लिए सेवा दे दूंगा।

इस प्रकार से समय बीतता गया, एक दिन वह समय आ गया जब नाना जी को उस गांव में जाना पड़ा। नाना जी ने कहा कि नामदेव अच्छे से भगवान की सेवा करना और दूध का भोग लगाना दूध भगवान को पिला देना ! नामदेव जी, दो किलो दूध गर्म करते करते जब एक कटोरा दूध रह गया, तो उसमें मेवा मिश्री इत्यादि मिलाकर के तुलसी पत्र का भोग लगाया और भगवान का पर्दा हटाकर ठाकुर जी के सामने कटोरा रख दिया। थोड़ी देर प्रभु से प्रार्थना करने लगे कि प्रभु आकर के भोग लगाइए, दूध रखा हुआ है प्रभु आकर दूध पीजिए,

इस प्रकार थोड़ी देर बाद जब, पर्दा हटा कर देखा तो दूध का कटोरा वैसे का वैसे ही रखा है अब तो नामदेव जी को बहुत पीड़ा हुई उन्होंने सोचा कि हो सकता है कि मेरी श्रद्धा में कोई कमी रह गई हो भगवान दूध नहीं पी रहे हैं, इस प्रकार से अगला दिन भी बीता उसी प्रकार से दूर रखा कटोरा भर के भगवान फिर नहीं आए नामदेव जी बहुत ही दुखी हो गए, परंतु यह बात घर में किसी को बताया नहीं अपने मन के अंदर रखा।

मन में खींचा तान चलती रही, कि कल नाना जी का तीन दिन पूरा हो जाएगा और यदि भगवान ने दूध नहीं पिया, तो नाना जी आकर पूछेंगे और फिर मुझे ठाकुर जी की सेवा नहीं मिल पाएगी। इसी प्रकार से प्रातः काल तीसरा दिन हुआ तीसरे दिन नामदेव जी उठे भगवान का बढ़िया से श्रृंगार किया और फूल माला प्रभु को अर्पण करके बढ़िया दूध का कटोरा तैयार किया, और उसमें मिश्री और भगवान का तुलसी पत्र मिलाकर के सामने रखा।

भगवान से कुछ देर प्रार्थना की देखा कि कटोरा वैसे का वैसे रखा है भगवान अभी दूध पीने के लिए नहीं आए, तभी उन्होंने आत्म समर्पण करते हुए प्रभु के सामने अपने हाथ में छूरी उठा ली और कहा हे प्रभु यदि आज आप दूध नहीं पिएंगे तो मैं अपने प्राणों को स्वयं ही समाप्त कर दूंगा। इतना कहकर ज्यौ ही अपनी गर्दन पर छुरी का प्रहार करना चाहा तुरंत ही ठाकुर जी प्रकट हो गए ठाकुर जी ने छुरी को पकड़ लिया, और नामदेव जी से कहा कि हम दूध पी रहे हैं आप ऐसा ना करें हम दूध पी रहे हैं।

इस प्रकार भगवान ने नामदेव जी के हाथों से दूध पिया अगले दिन नाना जी जब घर पर आए तो नाना जी

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी

माया की नींद से जाग्रत होकर भगवान को याद करें,
जिसने आपको मानव जीवन का स्वर्ण अवसर दिया है।

ने सेवा के बारे में पूछा तब नामदेव जी ने दूध पीने की भगवान की लीला को बताया उनको विश्वास नहीं हुआ उन्होंने कहा यह मेरे सामने भगवान दूध पिए तो मैं मान लूंगा !

अगले दिन प्रातः काल नामदेव जी ने इसी प्रकार से भगवान के सामने दूध रखा, परंतु भगवान दूध पीने के लिए नहीं आए तब नामदेव जी ने भगवान से कहा कि कल मेरे सामने जब दूध पीकर गए तो आज क्यों नहीं आए मुझे झूठा बनाते हो, इतना कहकर के हाथ में छुरी उठा लिया, और जैसे ही अपनी गर्दन पर चलाना चाहा तुरंत भगवान अपने दिव्य रूप में प्रकट होकर के मोर मुकुट बंसी वाले हाथ में बंसी लिए हुए प्रगट हो गए।

देखते ही देखते भगवान दूध का सारा कटोरा पीने ही वाले थे तो नामदेव जी ने कहा प्रभु थोड़ा मेरे लिए भी छोड़ देना क्योंकि बचपन से हम नाना जी के हाथ से आपका ही भोग लगाया दुग्ध पान करता आ रहा हूं। नामदेव जी के द्वारा नाना बामदेव को भगवान के दर्शन हुए और सभी भगवान के दर्शन करके कृतकृत्य हो गए, और उसी दिन से नाना जी ने नामदेव जी को भक्ति समर्पित कर दी अर्थात ठाकुर जी की सेवा दे दी।

इस प्रकार से संस्कार यदि आपके परिवार में या आपके नाना मामा नाना नानी या आप के संपर्क में जिसके पास में बचपन से ही भगवान की कृपा भगवत भक्ति प्राप्त हो जाती है उसका जीवन धन्य हो जाता है इस कथा के माध्यम से अपनी भक्ति को पुष्ट करें और आगे बढ़े तथा जीवन के अपने अंतिम लक्ष्य परमात्मा को प्राप्त करें।

संकलित

सद्गुरु टेऊँराम गुणगाथा

युक्ति से मिलती है मुक्ति

जीवन मुक्ती संत जन, दिल के बड़े उदार।
कह टेऊँ व्यवहार में, होवत सदा बहार।।

संत महात्मा अक्षुण्ण युक्तियों के भण्डार होते हैं. उनके पास पारमार्थिक के साथ-साथ व्यवहारिक युक्तियाँ भी बहुत-सी होती हैं. कोई भी जीव किसी उलझन में पड़ जाये तो महापुरुष उसे सहजता से दूर कर देते हैं.

ऐसे ही एक समय युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज खेत-खलिहानों में भ्रमण कर रहे थे. परमात्मा की अलौकिक मस्ती! सभी मजदूर, खेतिहर किसान महाराजश्री का दर्शन करके प्रसन्नचित्त हो रहे थे. तब एक किसान महाराज जी के पास आया और कहने लगा- स्वामी जी! एक हाथ में एक ही खरबूज आ सकता है. दो हाथ हैं तो दो ही खरबूज हाथ में आयेंगे. स्वामी जी मंद-मंद मुस्करा रहे थे. स्वामी जी ने कहा- हम तो एक हाथ में कई खरबूज उठा सकते हैं. यह सुनकर सभी को आश्चर्य हुआ. उत्सुकता से पूछने लगे- स्वामी जी! कैसे- कैसे?

सत्गुरु की कृपा बिना, सरे न कोई काज।
तांते गुरु की शरण ले, कह टेऊँ तज लाज।।

महापुरुषों के पास बहुत युक्तियाँ होती हैं. उसी खेत में एक खरबूज की लम्बी बेल दिख रही थी. स्वामी जी ने पूरी बेल को हाथ में उठा लिया, उसमें अनेक खरबूज लगे हुए थे. देखो! हमने बहुत सारे खरबूज एक ही हाथ में उठा लिये. यह देखकर सभी किसान भाई प्रसन्नचित्त हुए. तो महापुरुषों के पास अध्यात्म के साथ ऐसी अनेक युक्तियाँ भी होती हैं. युक्ति से ही मुक्ति मिलती है. महापुरुषों की चरण शरण में रहकर हमारे लोक-परलोक दोनों सँवर जाते हैं. महापुरुषों की छोटी-छोटी बातों में ज्ञान की गहराइयाँ होती हैं जो हमें परम पद तक पहुँचा देती हैं.

-साधक, श्री अमरापुर दरबार (डिब्), जयपुर

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

अहंकार को समाप्त किये बिना शान्ति सम्भव नहीं।

श्री अमरापुर स्थान सहित सभी प्रेम प्रकाश आश्रमों में रही कार्तिकोत्सव धूम

जयपुर । समस्त भूमण्डल में सनातन धर्मियों द्वारा पवित्रतम कार्तिक मास में वैदिक विधि अनुसार अनेक प्रकार के अनुष्ठान किये जाते हैं. इस पवित्र माह में सभी नदियों में स्नानार्थ एवं मंदिरों में दर्शन-पूजन-संकीर्तन आदि के लिए प्रभात वेले से ही भक्तों की भीड़ उमड़ती है. इसी प्रकार मंगलमूर्ति आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के प्रेम प्रकाश आश्रमों में भी कार्तिक महीने के अंतिम पखवाड़े में चन्द्रदर्शन से पूर्णिमा तक मेले लगे हुए हैं. श्री अमरापुर स्थान जयपुर सहित, कानपुर, सीकर, इन्दौर, ब्यावर, ग्वालियर सहित अनेक आश्रमों में प्रतिदिन प्रभातफेरी का मौजानन्द हो रहा है जिसमें हजारों भक्तजन हरिनाम संकीर्तन का अखुट लाभ लेते दिखाई पड़ रहे हैं. सभी आश्रमों पर प्रातःकाल ५ बजे से ही प्रेमियों का आना शुरू हो जाता है और वे शाश्वत् सत्य (हरिनाम कीर्तन) के अप्रतिम आनन्द में मुग्ध हो रहे हैं. श्री अमरापुर स्थान पर तो प्रतिदिन प्रातः काल ६ बजे से ७ बजे तक आयोजित प्रभातफेरी में तो संतो द्वारा प्रेमियों को खूब मौजानन्द कराया जा रहा है । संकीर्तन फेरी में गोविंद मेरो है, गोपाल मेरो है, श्री बांके बिहारी नंदलाल मेरो है, नमः शिवाय धुनी, जय जय राधा रमण हरी बोल, गोविंद बोलो हरि गोपाल बोलो, सतनाम साक्षी महामंत्र आदि हरि प्रिय नामों का उच्चारण किया गया । संतों द्वारा प्रवचनों में बताया गया कि कार्तिक माह में हरि प्रिय नामों के उच्चारण से मन के विकार दूर होते है । शास्त्रों के अनुसार ११ महीने के धार्मिक कार्यों का फल इस एक महीने यानि कार्तिक मास में जप, दान, स्नान से प्राप्त किया जा सकता है । २३ अक्टूबर से ०५ नवंबर तक मनाये जा रहे कार्तिकोत्सव में प्रतिदिन प्रातःकाल हरिनाम संकीर्तन प्रभात फेरी निकाली गई । महोत्सव के अंतर्गत पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज ने अपने अमृत वचनों में बताया कि कलयुग में कार्तिक के समान कोई दूसरा मास नहीं । सत्युग के समान युग नहीं । वेदों के समान कोई शास्त्र नहीं और श्री गंगाजी के समान कोई तीर्थ नहीं हैं । इसलिये सभी को इस पवित्र कार्तिक मास में पुण्य शुभ कर्म करना चाहिये ।

कार्तिकोत्सव के अंतर्गत गोपाष्टमी उत्सव एवं हरिप्रबोधिनी एकादशी का उत्सव भी सभी आश्रमों पर आनन्दपूर्वक मनाया गया.

कार्तिकोत्सव का समापन कार्तिक पूर्णिमा के दिन पूर्ण भक्ति भाव के साथ हुआ । कार्तिक पूर्णिमा के दिन प्रातः ६ से ७ बजे तक हरिनाम संकीर्तन यात्रा मंदिर परिसर में निकाली गई तत्पश्चात् नित्य नियम के अनुसार प्रार्थना, संतों का सत्संग, श्रीमद् भागवत गीता, कार्तिक मास की कथा, श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ साहिब के पाठों का भोग पारायण, आरती आदि का आयोजन हुआ एवं संत-महात्माओं के द्वारा सत्संग प्रवचन किये गये । पूज्य संतो द्वारा देव दीवाली एवं कार्तिक मास की महिमा पर प्रकाश डाला गया । अंत में विशाल भण्डारें का आयोजन हुआ जिसमें सभी ने प्रसादी ग्रहण की । सायंकाल को आश्रम परिसर में अंसख्य दीप प्रज्जवलित किये गये ।

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश

बिना गुरु की भक्ति के आत्म-ज्ञान प्राप्त करना असम्भव है ।
ईश्वर से भी गुरु का महत्त्व बड़ा है ।

जयपुर में गोपाष्टमी महोत्सव मनाया गया

राजस्थान के माननीय मुख्यमंत्री जी ने गौमाता का पूजन कर लिया आशीर्वाद

जयपुर। कार्तिक महीने की अष्टमी तिथि भगवान श्रीकृष्ण के गोचारण पर जाने के पवित्र दिन को हम सब गोपाष्टमी महोत्सव के रूप में समूचे संसार में मनाते हैं. इस वर्ष भी ३० अक्टूबर गुरुवार को गोपाष्टमी का महानतम पर्व मनाया गया. पूर्व परम्परा अनुसार इस साल भी 'सद्गुरु टेऊँराम गोशाला' मांग्यावास, मानसरोवर में गोपाष्टमी मेले का विशाल आयोजन ३० अक्टूबर गुरुवार को किया गया. मेले में जयपुर के हजारों भक्तों के अलावा देश-विदेश से अनेक प्रेमी भी शामिल हुए. श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्यपाद सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज की पावन अध्यक्षता में मनाये गये गोपाष्टमी मेले में सर्वप्रथम गोमाता की पूजा-अर्चना-आरती की गई. गोमाता को उपयुक्त भोजन खिलाकर उनकी सेवा की गई. इस बार गोपाष्टमी पर आयोजित कार्यक्रम में राजस्थान के माननीय मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा जी ने सपत्नीक गौमाता की पूजा-अर्चना कर आशीर्वाद प्राप्त किया। गौमाता के पूजन के पश्चात् माननीय मुख्यमंत्री जी ने पूज्य महाराजश्री का अभिनन्दन कर उनका आशीर्वाद प्राप्त किया एवं पूज्य महाराजश्री जी द्वारा भी मुख्यमंत्री जी को पखर ओढ़ाकर प्रसाद देकर उनका अभिनन्दन किया गया। इसके पश्चात् सत्संग सभा में संतों ने गौमाता की महिमा का गुणानुवाद किया एवं हाजरा हजूर गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज ने अपने प्रवचनों में कहा कि गौ माता के अन्दर ३३ कोटि देवी-देवताओं का वास है। गौमाता की सेवा करने से ३३ कोटि देवी देवताओं की उपासना का फल प्राप्त होता है। न केवल गोपाष्टमी अपितु प्रतिदिन गौमाता की सेवा करनी चाहिये। गौसेवा करने वाले व्यक्ति के जीवन में कभी कोई संकट नहीं आता और गौमाता उनकी हर मनोकामना पूरी करती है। अंत में आम भण्डारा हुआ जिसमें ५००० से अधिक श्रद्धालुओं ने प्रसाद ग्रहण किया।

इस अवसर पर पूज्य महाराजश्री के साथ स्वामी मनोहरलाल जी महाराज, संत मोनूराम जी, संत नरेशलाल जी, संत हरीश एवं अन्य संतगण उपस्थित थे।

इस पुनीत अवसर पर सिविल लांइस विधायक श्री गोपाल शर्मा जी ने पावन तीर्थ श्री अमरापुर स्थान स्थित गौशाला में गौमाता की पूजा-अर्चना कर पूज्य महाराजश्री एवं सन्तों का आशीर्वाद प्राप्त किया।

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश

आज कल के लोगों को सिनेमा, सिगरेट, पान, सुपारी और चाय के अलावा कहीं भी सुख देखने में नहीं आता है।

सद्‌गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी

हम सांसारिक सहारे छोड़कर भगवान की शरण लें तो
आपको चारों पदार्थ धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति होगी।

प्रेम प्रकाश आश्रम कोटा का वार्षिकोत्सव-कार्तिकोत्सव मेला धूमधाम से सम्पन्न

श्री प्रेम प्रकाश आश्रम कोटा का वार्षिकोत्सव मेला कार्तिकोत्सव के मध्य १ से ५ नवम्बर २०२५ तक बड़े ही श्रद्धापूर्वक एवं धूमधाम से परम पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज की अध्यक्षता एवं सन्त मण्डली की उपस्थिति में मनाया गया । इस अवसर पर सन्त श्यामलाल जी के सानिध्य में १ नवम्बर २०२५ को एकादशी के पावन पर्व पर भीतरिया कुंड पर प्रातः ५ बजे कार्तिक स्नान, हवन, सत्संग का आनन्द सैकड़ों प्रेमियों ने संतों के साथ लिया. २ नवम्बर को दोपहर ३ बजे कोटा में जब गाड़ियों के काफिले में सद्गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज का मंगल आगमन हुआ तो सबके मुख मण्डल पर एक अभिनव आभा सी प्रकाशित हो गयी. गुरु बाबा के मनमोहक दर्शन पाकर अनेक प्रेमी फूलों की वर्खा करने लगे, दूसरी ओर संत श्यामलाल के साथ श्री प्रेम प्रकाश सेवा मण्डली व नगर के प्रमुखजन पूज्य महाराज श्री संत मण्डल का माल्यार्पण करके स्वागत करने लगे. सद्गुरु महाराज के मंगल आगमन से प्रफुल्लित प्रेमप्रकाशी सेवाधारियों द्वारा आश्रम परिसर, श्रीमंदिर के साथ आश्रम पहुँच मार्ग व सत्संग मंच को भी सुंदरतम स्वरूप दिया गया था. इस अवसर पर दिनांक २ नवम्बर को निःशुल्क नेत्र एवं दन्त रोग चिकित्सा का कैम्प भी श्रीपुरा स्थित आश्रम पर लगाया गया, जिसमें बड़ी संख्या में मरीजों की जांच कर उन्हें परामर्श दिया गया। २ से ५ नवम्बर तक प्रतिदिन प्रातःकाल ७ से १० एवं सायंकाल ५ से ८ बजे तक पूज्य संत मंडल एवं परम पूज्य महाराजश्री का सत्संग का आयोजन हुआ । दिनांक ३ नवम्बर सोमवार के दिन कोटा में नवीन प्रेम प्रकाश आश्रम का भूमि पूजन परम पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज एवं पूज्य संत मण्डल द्वारा कर निर्माण कार्य का आरम्भ कराया गया । दिनांक ५ नवम्बर कार्तिक पूर्णिमा के दिन प्रातः ६ से ८ बजे तक हवन-यज्ञ को पूज्य गुरुदेव भगवान संतों के कर कमलों से पूर्णाहुति देकर कार्तिकोत्सव मेले को सम्पन्न किया गया. इसके पश्चात् दोपहर १२ बजे तक सत्संग सभा में पाठों के भोग पारायण व सत्यनारायण भगवान की कथा हुई. तत्पश्चात् आम भण्डारे में हजारों हजार भक्तों ने सद्गुरु महाराज जी की भोजन प्रसादी को श्रद्धाभाव से ग्रहण किया. सायं सत्संग सभा के बाद पूज्य महाराजश्री द्वारा पल्लव पाकर उत्सव का समापन किया गया । सत्संग समारोह में सभी श्रद्धालुओं ने भाग लेकर सत्गुरू महाराज, सन्त मण्डल के दर्शन सत्संग का लाभ प्राप्त कर अपने जीवन को सफल बनाया।

सद्गुरू हरिदासराम वचनावली

आत्म-ज्ञान, ब्रह्म-ज्ञान, ईश्वर-दर्शन कोई साधारण बात नहीं, इनका बड़ा महत्व है, और बड़ा ही रहस्य युक्त है। इस रहस्य को जानने के लिये शास्त्रों का गहन अध्ययन करना पड़ेगा। 'श्री रामायण', 'श्री महाभारत' यह कोई साधारण ग्रन्थ नहीं-ऋषिकृत ग्रन्थ हैं। पढ़ना हमें कब पड़ेगा ? जब हमें जाना हो आगे।

प्रेम प्रकाश धाम दिल्ली का वार्षिक उत्सव धूमधाम से सम्पन्न

दिल्ली । आचार्य सतगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की असीम कृपा से एवं सद्गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज जी के पावन सानिध्य में स्वामी जयप्रकाश जी महाराज जी का ५०वां पुण्यतिथि उत्सव एवं स्वामी जयदेव जी महाराज का पंचम पुण्यतिथि उत्सव मेला बड़ी धूमधाम से १३ से १७ नवंबर २०२५ तक मनाया गया । इस अवसर पर अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गए । इस उपलक्ष में सर्वप्रथम १३ नवंबर गुरुवार को श्रीमद् भगवत् गीता मैया एवं श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ के पाठों का प्रारंभ किया गया एवं एवं १४ नवंबर को पूज्य सदगुरु महाराज जी एवं संत मण्डल के आगमन पर उनका भव्य स्वागत किया गया। १५ नवंबर को प्रातःकाल ६.०० बजे से १२.०० बजे तक हवन एवं ध्वजावंदन का कार्यक्रम हुआ तत्पश्चात् भंडारा हुआ।१६ नवंबर को प्रातः ६.०० से १२ बजे तक सत्संग एवं ब्राह्मण भोज में २१ ब्राह्मणों को भोजन-भंडारा कराकर यथायोग्य भेंटादि दी गयी। सायंकाल ४.०० से ७.३० बजे तक भजन संध्या एवं संतों महात्माओं का सत्संग एवं पूज्य महाराजश्री के सत्संग के बाद भंडारा हुआ । १७ नवंबर प्रातःकाल ८.०० बजे मूर्ति पूजा एवं प्रातः ६ से १२ बजे तक नेहरु नगर आश्रम में सत्संग प्रवचन का कार्यक्रम हुआ । श्री प्रेम प्रकाश धाम मल्कागंज में सायंकाल ४.०० से ८.०० तक संतों महात्माओं के प्रवचन, श्रीमद् भगवद् गीता मैया एवं श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ के पाठ साहब का भोग तथा सतगुरु महाराज जी ने पल्लव पाकर उत्सव का समापन किया तत्पश्चात् सभी ने भंडारे में प्रसाद ग्रहण किया । इस अवसर पर बच्चों का सांस्कृतिक कार्यक्रम नृत्य तथा राधा कृष्ण की झांकी का आयोजन भी हुआ । वार्षिकोत्सव मेले में फरीदाबाद, पलवल, हिसार, गुड़गांव, समालखा, होडल, पिनगवा तथा अन्य शहरों से भी प्रेमीगण पधारे एवं मेले में शामिल होकर अपना जीवन सफल किया ।

सद्गुरू टेऊँराम अमृतोपदेश

अपने गुरू पर हजारों बार बलिहार जाऊँ जिसने मुझे पशु से मनुष्य, मनुष्य से देवता और देवता से भगवान बना दिया।

गयाजी धाम में पितरों के निमित पूजन व सत्संग समारोह

गया। आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के पावन आशीर्वाद से परम पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज के पावन सानिध्य एवं संत मण्डली की उपस्थिति में श्री गयाजी धाम में पितरों के निमित पूजन एवं सत्संग समारोह का आयोजन दिनांक १८ एवं १९ नवम्बर को किया गया । इस आयोजन में लगभग १५०० श्रद्धालुओं ने अपने पितृों के निमित्त पिंडदान पूजन किया। दिनांक १८ नवम्बर को सायंकालीन सत्संग सभा में संत मण्डल के प्रवचनों के बाद परम पूज्य महाराजश्री ने अपनी अमृतमयी वाणी से भक्तजनों को ज्ञान का प्याला पिलाया । पूज्य महाराजश्री ने पिंडदान के महत्व को सरल भाषा में समझाते हुए बताया कि धर्म की राह पर चलकर ही जीवन में वास्तविक सुख और शांति प्राप्त होती है। पूज्य महाराजश्री ने मनमोहक भजनों के माध्यम से धर्म और ईश्वर प्रेम का संदेश दिया ।

१९ नवम्बर को प्रातःकाल ६ से ७ बजे तक प्रभातफेरी-शोभायात्रा में श्रीमन् नारायण-नारायण हरि-हरि, हरिबोल, सतनाम साक्षी की धुनी लगाते हुए सभी प्रेमीगण पूज्य महाराजश्री के सानिध्य में फल्गु नदी के तट पर पितरों के निमित पूजन करने के लिये पहुंचे । यहां पर गयाधाम के कर्मकांडी पंडित धनंजय सिंधी

सूरदास पंडित के पुत्रों द्वारा विधिवत सभी प्रेमियों को पिंडदान कराया गया । विष्णुपद मंदिर में दर्शन के बाद भवन में २०० ब्राह्मणों को भोजन कराया गया तत्पश्चात् भण्डारे का आयोजन हुआ । इस अवसर पर देश-विदेश के अलग-अलग शहरों से लगभग १५०० प्रेमीगण पितृपूजन के मेले में शामिल हुए ।

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश

उदारता का गुण मन पर है, धन पर नहीं,
बड़प्पन का गुण बुद्धि पर है, आयु पर नहीं ।

स्वामी जीवनमुक्त महाराज के परम शिष्य स्वामी जयमुक्त जी महाराज का 25वां वर्सी उत्सव मनाया गया

खैरथल । स्वामी जीवनमुक्त जी महाराज के परम शिष्य स्वामी जयमुक्त जी महाराज का २५वां पावन वर्सी उत्सव श्री प्रेम प्रकाश आश्रम खैरथल में रविवार ०२ नवम्बर २०२५ देवउठनी एकादशी के दिन बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया । प्रातःकाल ४.३० बजे खैरथल गांव स्थित श्मशान घाट पर दीप प्रज्जवलित कर आरतीयां की गई तत्पश्चात् हरिनाम संकीर्तन प्रभातफेरी निकाली गयी ।

प्रातः काल ९ से १० बजे तक हवन एवं आरतीयां हुई । तत्पश्चात् नित्य नियम प्रार्थना, सत्संग, चालीसा पाठ एवं पाठ साहब का भोग डाला गया । उसके बाद दोपहर को एकादशी व्रत का आम भण्डारा किया गया। सायंकाल ४.३० से ६.०० बजे तक भजन-सत्संग का कार्यक्रम हुआ । तत्पश्चात् ६.०० बजे पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज द्वारा फोन पर आर्शीवचन देकर पल्लव पाकर उत्सव का समापन किया गया । इसके बाद तुलसी माता विवाह पूजन कर प्रसाद वितरण कर कार्यक्रम पूर्ण किया गया।

पानी का सेवन कितना उपयोगी

जल ही जीवन है. हमारे जीवन में पानी की उपयोगिता और महत्त्व क्या है, इससे भला कौन परिचित नहीं होगा. भोजन के बिना तो मनुष्य कुछ समय तक जीवित रह सकता है, लेकिन पानी के अभाव में जीवन की कल्पना करना भी व्यर्थ है. ज्ञात हो हमारे शरीर के कुल वजन का ७० प्रतिशत भाग पानी ही होता है. इसके अभाव में शरीर किसी भी भोज्य पदार्थ का उपयोग नहीं कर पाता. इस कारण हमें पर्याप्त पानी पीने की आवश्यता होती है और पानी शरीर की आवश्कताओं की पूर्ति करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है.

पानी के लाभः-

1. पानी का अधिक सेवन त्वचा को लम्बी उम्र प्रदान करता है.
2. पानी के सेवन से त्वचा की कोशिकाओं को पर्याप्त नमी प्राप्त होती है.
3. पानी के सेवन से शरीर को कई प्रकार के पोषक तत्त्वों की पूर्ति हो जाती है.
4. प्रातः निहार मुँह नियमित पानी का सेवन शरीर को स्वस्थ रखने के साथ रोगों को दूर भगाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है.
5. डायरिया, हैजा व उल्टी-दस्त में पानीका अधिक से अधिक सेवन करना शरीर में पानी की हुई कमी को पूरा करता है.
6. पर्याप्त पानी का सेवन कब्ज और डिहाइड्रेशन की समस्या का समाधान करता है.

पानी का सेवन करते समय सावधानियां :-

> पानी को सदैव घूँट-घूँट और स्वाद लेकर पीना चाहिए.

> पानी सदैव बैठ कर पीना चाहिए.

> हसंते, बात करते और जल्दबाजी में पानी का सेवन कभी नहीं करना चाहिए.

> भोजन के उपरांत तत्काल पानी का सेवन नहीं करना चाहिए; तुरन्त पानी का सेवन पाचनक्रिया को मंद करता है.

> पानी उबाल कर पीना स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से बहुत उपयोगी है.

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी — मन में किसी वस्तु की चाह रखना ही दरिद्रता है ।

जयपुर में ''श्री अमरापुर सेतु'' का हुआ भव्य नामकरण उद्घाटन समारोह

प्रेम प्रकाश मंडलाध्यक्ष स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज एवं विधायक गोपाल शर्मा द्वारा हुआ ''अमरापुर सेतु''का भव्य उद्घाटन

जयपुर रेलवे स्टेशन (लोहपथ) से सिंधी कैम्प बस स्टैंड (परिवहन पथ) तक जोड़ने वाली पुल श्री अमरापुर सेतु का हुआ नामकरण समारोह

जयपुर। जयपुर रेलवे स्टेशन (लोहपथ) से सिंधी कैम्प बस स्टैंड (परिवहन पथ) तक जोड़ने वाली पुल का नामकरण समारोह ''श्री अमरापुर सेतु'' शनिवार २६ नवम्बर २०२५ को प्रेम प्रकाश मंडलाध्यक्ष परम पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज, पूज्य संत मण्डल एवं सिविल लाइन विधानसभा क्षेत्र के लोकप्रिय विधायक गोपाल शर्मा जी के कर कमलों द्वारा किया गया । नामकरण समारोह के उपलक्ष में विधायक महोदय ने संतो को नमन करते हुए पुल को सिंध के महान संतो की पावन तीर्थ स्थल श्री अमरापुर सेतु पर नामांकित होने पर सभी को बधाई एवं शुभकामनाएं दी । पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज ने बताया कि सिंध में रेत के टीले पर महापुरुषों ने सुंदर श्री अमरापुर स्थान का निर्माण किया, उनकी करणी, भक्ति की शक्ति के प्रताप आशीर्वाद से आज विश्व के कोने कोने में अनेकों प्रेम प्रकाश आश्रम एवं श्री अमरापुर स्थान सेवा के कार्य में निरंतर अग्रसर है । जयपुर में अनेक वर्षों से निरंतर श्री अमरापुर मंदिर के बाहर सर्व समाज के लिए श्री अमरापुर जल मंदिर में जल, अन्न भोजन प्रसादी (पुलाव) वितरण सेवा कार्य चल रहा है ! ऊंच नीच से परे, सर्व समाज के लिए निःशुल्क चार मोक्ष वाहन ७ मॉरचुरी बॉक्स,(डीप फ्रिज) सेवा भी निरंतर चल ही रहीं है !

संत श्री मोनूराम जी ने विधायक गोपाल शर्मा जी से चर्चा करते हुए आग्रह किया कि सनातन धर्म के प्रवर्तक श्री १००८ सदगुरु स्वामी टेऊँराम जी राम महाराज जी के संक्षिप्त जीवन चरित्र एवं आध्यात्मिक वाणी दोहावली को हिंदी पाठ्य पुस्तकों में (पद छंद दोहे) एवं नवीन शिक्षा नीति २०२० के तहत ''स्नातक स्तर'' के पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए ! उद्घाटन समारोह के पश्चात श्री गुरु महाराज जी ने विधायक गोपाल शर्मा जी सहित अनेक गणमान्यो को पखर-प्रसाद देकर आशीर्वाद दिया !! श्री अमरापुर सेतु नामकरण उद्घाटन समारोह में विशाल सिंधी समाज उमड़ा पड़ा !! कार्यक्रम में स्वामी मनोहर लाल जी महाराज, संत श्याम लाल जी (कोटा), संत मोनूराम जी (जयपुर), संत शंभूलाल जी (ब्यावर), संत कमल, संत ढालूराम जी आदि संत महात्मा उपस्थित रहे !

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

'मिले पद निर्वाण' न हिलना, न डुलना, न बोलना-अर्थ बहुत होते हैं। पर निर्वाण पद का प्रधान अर्थ होता है- शान्त हो जाना।

जयपुर में अमरापुर सेतु नामकरण-उद्घाटन समारोह का कवरेज प्रमुख समाचार-पत्रों में

प्रेम प्रकाश मंडलाध्यक्ष द्वारा अमरापुर सेतु उद्घाटन, विधायक गोपाल शर्मा रहे कार्यक्रम के मुख्य अतिथि

संतो के सानिध्य में हुआ श्री अमरापुर सेतु का नामकरण

● दिव्य जनजागृति समाचार

दैनिक भास्कर जयपुर 30-11-2025

खासा कोठी फ्लाईओवर का हुआ नामकरण; अब श्री अमरापुर सेतु के नाम से जाना जाएगा

भगत प्रकाश महाराज ने किया शुभारंभ

विधायक गोपाल शर्मा और भगत प्रकाश महाराज ने किया शुभारंभ

खासा कोठी पुलिया अब श्रीअमरापुर सेतु

दैनिक नवज्योति

Jaipur City - 30 Nov 2025 - Page 4

श्रीअमरापुरा सेतु का किया उद्घाटन

रेलवे स्टेशन को सिंधी कैम्प से जोड़ेगा नवनिर्मित पुल

ब्यूरो/नवज्योति, जयपुर। रेलवे स्टेशन को सिंधी कैम्प बस स्टैंड परिवहन पथ से जोड़ने वाले नवनिर्मित पुल का उद्घाटन शनिवार को प्रेमप्रकाश मंडलाध्यक्ष स्वामी भगत प्रकाश महाराज और विधायक गोपाल शर्मा ने किया। पुल का नामकरण श्री अमरापुर सेतु रखा गया है। विधायक गोपाल शर्मा ने संतों को नमन व्यक्त करते हुए कहा कि यह सेतु सिंध के महान संतों की तपस्थली अमरापुर की भावना और समाज सेवा की धारा को नई दिशा देगा। स्वामी भगत प्रकाश महाराज ने बताया कि सिंध में रेत के टीलों पर स्थापित श्री अमरापुर स्थान की परंपरा आज विश्व में फैले प्रेम प्रकाश आश्रमों के माध्यम से सेवा कार्य के रूप में आगे बढ़ रही है। समारोह में विशाल सिंधी समाज की उपस्थिति रही।

पंजाब केसरी SUN,30 NOVEMBER 2025 EDITION: JAIPUR, PAGE NO. 6

श्री अमरापुर सेतु नामकरण से बढ़ी सांस्कृतिक पहचान

लोकार्पण समारोह में सिंधी समाज की उमंग, संतों का सानिध्य

जयपुर, 29 नवंबर 2025 (ब्यूरो): जयपुर रेलवे स्टेशन हरिपुरा से सिंधी कैंप बस स्टैंड को जोड़ने वाले खासा कोठी पुलिया के नव नामकरण पट्टिका का लोकार्पण शनिवार को संपन्न हुआ। अब इस पुल को आधिकारिक रूप से खासा कोठी पुलिया के स्थान पर श्री अमरापुर सेतु के नाम से जाना जाएगा।

समारोह के मुख्य अतिथि सिविल लाइंस विधायक गोपाल शर्मा रहे, जबकि उद्घाटन प्रेम प्रकाश मंडल के मंडलाध्यक्ष स्वामी भगत प्रकाश और संत मंडल की उपस्थिति में किया गया। कार्यक्रम के बाद प्रसाद प्रसाद वितरण कर सभी को आशीर्वाद प्रदान किया गया। सिंधी समाज और सिविल लाइंस क्षेत्र के भाजपा कार्यकर्ताओं की उल्लेखनीय उपस्थिति रही।

विधायक गोपाल शर्मा ने सिंध प्रांत के पवित्र तीर्थ श्री अमरापुर के नाम पर सेतु का नामकरण किए जाने की अधिसूचना वाचन कर सुनाई और पूरे सिंधी समाज को शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के दूरदर्शी नेतृत्व में राष्ट्र और संस्कृति की खोई चमक पुनर्स्थापित करने का कार्य जारी है।

पाठ्यक्रम में शामिल हो स्वामी टेऊंराम की वाणी

संत मोनूराम महाराज ने आह्वान किया कि सद्गुरु स्वामी टेऊंराम महाराज के संक्षिप्त जीवन चरित्र, दोहावली, पद और छंद को नई शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत छात्रक पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए। विधायक शर्मा ने सरकार के उच्च स्तर पर सकारात्मक सहयोग का आश्वासन दिया।

उन्होंने प्रधानमंत्री के मंत्र 'विरासत भी और विकास भी' का संदर्भ देते हुए कहा कि यह नामकरण पीढ़ियों तक सांस्कृतिक विरासत को संजोने का प्रयास है।

स्वामी भगत प्रकाश ने समारोह में अमरापुर सेतु नामकरण के लिए विशेष प्रयास करने के लिए विधायक गोपाल शर्मा का आभार व्यक्त किया। उन्होंने बताया कि प्रेम प्रकाश मंडल विश्व के कोने-कोने में सेवा कार्य स्वरूप सक्रिय है। जयपुर में भी अमरापुर मंदिर के बाहर सर्वसमाज के लिए निःशुल्क अन्न प्रसादी, चार मोक्ष वाहन और सात डीप फ्रीजर बॉक्स की सेवा कई वर्षों से सतत संचालित है। उन्होंने अनुयायियों से सेवाकार्यों की निरंतरता बनाए रखने का आह्वान किया।

ये संत और समाजसेवी भी रहे मौजूद

समारोह में प्रमुख संतों में स्वामी मनोहर लाल, संत श्याम लाल कोटा, संत मोनूराम जयपुर, संत शंभूलाल ब्यावर, संत कमल, संत डालूराम और संत झामनदास उपस्थित रहे। समाजसेवियों में महेश कलवानी, जितेंद्र लखवानी, मुकेश कलवानी, नीरज कलवानी, हरिलाल टहलानी, अशोक जेठवानी, बी.डी. टेकवानी, किशन कलवानी, दौलतराम, टेक वाधवानी, कुमार खटवानी, कुमार विधानी, गोवर्धन असवानी सहित बड़ी संख्या में सेवादार मौजूद रहे।

पत्रिका

ब्रीफ न्यूज

खासा कोठी पुलिया अब अमरापुर सेतु

जयपुर @ पत्रिका. जयपुर रेलवे स्टेशन से सिंधी कैंप बस स्टैंड को जोड़ने वाली पुलिया का शनिवार को नामकरण किया गया। खासा कोठी पुलिया को अब अमरापुर सेतु के नाम से जाना जाएगा। समारोह के मुख्य अतिथि विधायक गोपाल शर्मा रहे। नामकरण समारोह प्रेम प्रकाश मंडल के मंडलाध्यक्ष स्वामी भगत प्रकाश और संत मंडल के सान्निध्य में हुआ। विधायक ने कहा कि सरकार देश और संस्कृति का खोया वैभव लौटाने का काम कर रही है। भगत प्रकाश ने कहा कि सिंध में रेत के टीलों पर महापुरुषों ने जो अमरापुर धाम बनाया, उसी करणी और भक्ति की शक्ति से आज विश्व के कोने-कोने में प्रेम प्रकाश मंडल सेवा कार्य कर रहा है।

प्रेम प्रकाश मंडलाध्यक्ष स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज एवं विधायक गोपाल शर्मा ने किया 'श्री अमरापुर सेतु' का नामकरण उद्घाटन

महानगर टाइम्स

जयपुर रेलवे स्टेशन को सिंधी कैंप बस स्टैंड से जोड़ने वाले पुल का धूमधाम से संपन्न हुआ नामकरण समारोह

खासा कोठी पुलिया को मिला नया नाम, अब होगा श्री अमरापुर सेतु

विधायक गोपाल शर्मा और भगत प्रकाश महाराज ने किया नामकरण

खासा कोठी पुलिया का नाम बदलकर हुआ श्री अमरापुर सेतु

जागो इंडिया जागो

सिटी रिपोर्टर, जयपुर

रेलवे स्टेशन (हरिपुरा) से सिंधी कैंप बस स्टैंड को जोड़ने वाले महत्वपूर्ण पुल का शनिवार को भव्य शुभारंभ किया गया। इस पुल का नाम अब आधिकारिक रूप से श्री अमरापुर सेतु रखा गया है। नामकरण समारोह के मुख्य अतिथि सिविल लाइंस विधायक गोपाल शर्मा रहे, जबकि उद्घाटन प्रेम प्रकाश मंडल के मंडलाध्यक्ष स्वामी भगत प्रकाश महाराज एवं संत मंडल के सान्निध्य में संपन्न हुआ। समारोह के बाद सभी को प्रखर प्रसाद वितरित कर आशीर्वाद प्रदान किया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में सिंधी समाज और सिविल लाइंस के भाजपा कार्यकर्ता उपस्थित रहे। विधायक गोपाल शर्मा ने सभी संतों को नमन करते हुए पुल का नाम सिंध प्रांत के पवित्र तीर्थ श्री अमरापुर के नाम पर रखे जाने की आधिकारिक अधिसूचना पढ़कर सुनाई और पूरे सिंधी समाज को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दीं। इस मौके पर विधायक गोपाल शर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के दूरदर्शी नेतृत्व के साथ डबल इंजन की भाजपा सरकार गुलामी की मानसिकता को बदलते हुए देश और संस्कृति का खोया वैभव लौटाने का काम कर रही है। इसलिए पीएम मोदी ने 'विरासत भी और विकास भी' का नारा दिया है। शर्मा ने कहा कि कहने को तो यह सिर्फ एक पुलिया का नाम बदला है लेकिन यह पीढ़ियों तक सांस्कृतिक विरासत संजोने का प्रयास है। इस मौके पर स्वामी मनोहरलाल महाराज, संत श्याम लाल, संत मोनूराम महाराज, संत शंभूलाल, संत कमल, संत डालूराम तथा संत झामन दास आदि शामिल रहे। पूर्व पार्षद महेश कलवानी, जितेंद्र लखवानी, मुकेश कलवानी, नीरज कलवानी, हरिलाल, अशोक जेठवानी, बी.डी. टेकवानी, आदि मौजूद रहे।

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश

अवतारी ऋषि, मुनियों महात्माओं से कोई विरले
विवेकी पुरूष ही लाभ प्राप्त करते हैं।

सेहत वजन वृद्धि (मोटापा)

वजन वृद्धि (मोटापा) एक गंभीर स्वास्थ्य समस्या है, जो दुनिया भर में लोगों को प्रभावित कर रही है। यह विश्वस्तरीय चिंता का विषय बन गया है, क्योंकि यह अनेक अन्य समस्याओं का भी प्रमुख कारण है।

मोटापे के कारणः

1. अनियमित और असंतुलित आहारः अधिक तला हुआ, मसालेदार, और मीठे खाद्य पदार्थों का सेवन मोटापे के प्रमुख कारणों में से एक है। अधिक फेट और शुगर का सेवन वजन बढ़ने में योगदान करता है।

2. आलसी जीवनशैलीः आधुनिक जीवनशैली में सेडेंट्री रहना, व्यायाम की कमी और बेहतर खान-पान की वजह से वजन वृद्धि होती है।

3. जीवन के तनावः तनाव वजन बढ़ाने का कारक हो सकता है। स्ट्रेस के कारण लोग खुद को कमजोर और उदास महसूस करते हैं और इससे खाने का भी विकल्प खराब हो सकता है।

मोटापे के प्रभावः

1. हृद्य रोगः मोटापा हृद्‌य संबंधी समस्याएं बढ़ाता है, जैसे कि दिल की बीमारियां, उच्च रक्त चाप और अर्धवृद्धि।

2. मधुमेहः मोटापा अनियमित रक्त शर्करा स्तर का कारण बन सकता है और मधुमेह के लिए एक मुख्य कारक होता है।

3. उच्च रक्तचापः अधिक वजन रखने से रक्तचाप बढ़ सकता है और यह जीवन के लिए खतरनाक हो सकता है।

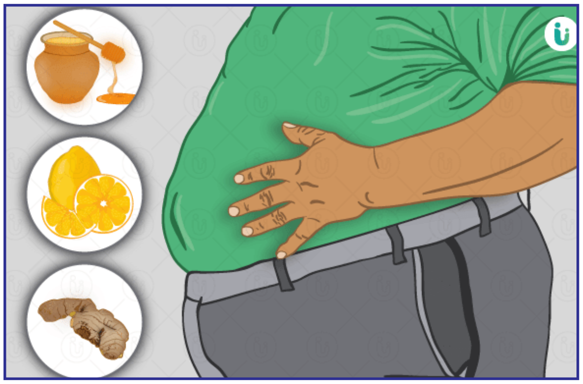

मोटापे के प्रबंधन के उपायः

1. स्वस्थ खानपानः अपने आहार में सब्जियां, फल, अनाज, प्रोटीन, और हेल्दी फेट शामिल करें। बाजार में मिलने वाले प्रसिद्ध खाद्य पदार्थों का सेवन कम करें।

2. व्यायामः नियमित व्यायाम करना जैसे कि योग, चलना, जॉगिंग या जिम जाना वजन को नियंत्रित करने में मदद कर सकता है।

3. स्वस्थ जीवनशैलीः नियमित नींद लेना, तंबाकू और शराब का सेवन न करना, और तनाव को कम करने के लिए ध्यान रखना भी वजन प्रबंधन में मदद करेगा।

मोटापे से बचने और इसे प्रबंधित करने में अपने दैनिक जीवन में स्वस्थ बदलाव करना आवश्यक है। संतुलित आहार, नियमित व्यायाम, और स्वस्थ जीवनशैली अपनाना।

डॉ. विपुल टेकवानी
(BNYS, MD Acu, CMSED)
Founder - Prasanyaa

अमरापुर गमन

श्रीमती दूरीबाई तलरेजा

भाटापारा। प्रेम प्रकाश मण्डल भाटापारा से सौम्य हृदया, शांतिप्रिय माता श्रीमती दूरीबाई तलरेजा धर्मपत्नि श्री निर्मलदास तलरेजा दिनांक ३१ अक्टूबर २०२५ को आचार्य प्रवर सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के अभय श्रीचरणों में श्री अमरापुर धाम सिधारी। आपकी माता एवं सासु मां दोनो ही प्रेम प्रकाश मण्डल की सेवादारी थी जिनकी वजह से आप भी बचपन से ही गुरुसेवा से जुड़ गई एवं प्रेम प्रकाश महिला मण्डली भाटापारा की लगातार २५ साल अध्यक्ष पद पर रहते हुए सेवा करती रही। कोरोना काल में प्रेम प्रकाश मण्डल द्वारा अन्नक्षेत्र की सेवा में भंडारा बनाने की सेवा करती थी। अपने अंतिम दिनों भी तबीयत खराब होने पर भी जब कभी उन्हें सेवा का मौका मिलता तो भंडारा एवं प्रसाद की सेवा करने आश्रम में उपस्थित रहती थी।

श्री मनोहरलाल रामचन्दानी जी

जयपुर। श्री मनोहरलाल (मन्नू) रामचन्दानी अपनी जीवन यात्रा पूर्ण कर दिनांक २१ नवम्बर २०२५ को इस नश्वर देह का परित्याग कर श्री अमरापुर धाम सिधारे। आप श्री अमरापुर स्थान जयपुर पर नियमित रूप से सेवाकार्य में सेवारत थे।

श्री प्रेम प्रकाश मंडलाध्यक्ष पूज्य गुरुवर सद्गुरु स्वामी श्री भगत प्रकाश जी महाराज एवं संत मंडली द्वारा दिवंगत आत्माओं को अमरापुर लोक में अपनी चरण-शरण में रखने हेतु आचार्य सत्गुरु स्वामी श्री टेऊँराम जी महाराज व प्रभु परमात्मा से पल्लव पाकर प्रार्थना की गई।

व्रत-पर्व-उत्सव

15 नवम्बर 2025–शनिवार– एकादशी
20 नवम्बर 2025– गुरुवार– अमावस्या
22 नवम्बर 2025– शनिवार– चन्द्र दर्शन
26 नवम्बर 2025– बुधवार– चौथ (मंगलमूर्ति सत्गुरु स्वामी श्री टेऊँराम जी महाराज का मासिक अवतरण दिवस)
01 दिसम्बर 2025–सोमवार– गीता जयंती
01 दिसम्बर 2025–सोमवार– मोक्षदा एकादशी
04 दिसम्बर 2025–गुरुवार– पूर्णिमा
07 दिसम्बर 2025–रविवार– गणेश चर्तुर्थी
15 दिसम्बर 2025–सोमवार– एकादशी
19 दिसम्बर 2025– शुक्रवार– अमावस्या
21 दिसम्बर 2025– रविवार– चन्द्र दर्शन
25 दिसम्बर 2025– गुरुवार– चौथ (मंगलमूर्ति सत्गुरु स्वामी श्री टेऊँराम जी महाराज का मासिक अवतरण दिवस)
31 दिसम्बर 2025–बुधवार– एकादशी

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी

हम सांसारिक सम्बन्धियों व मित्रों के लिए व्यर्थ आँसू बहाते हैं। प्रभु के विरह में गंगा जमुना बहानी चाहिए।

श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य गुरुवर

सत्गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज

का यात्रा कार्यक्रम नवम्बर 2025 से जनवरी 2026 तक

15 से 17 नवम्बर 2025	दिल्ली
18 से 19 नवम्बर 2025	गया (पिंडदान)
20 से 22 नवम्बर 2025	काशी
23 से 25 नवम्बर 2025	प्रयागराज
26 नवम्बर 2025	अयोध्या
27 से 28 नवम्बर 2025	लखनऊ
29 से 30 नवम्बर 2025	जयपुर
01 दिसम्बर 2025	अजमेर (प्रातःकाल गीता जयंती उत्सव)
01 दिसम्बर 2025	भीलवाड़ा (सायंकाल सत्संग)
02 से 03 दिसम्बर 2025	नसीराबाद, केकड़ी
04 से 06 दिसम्बर 2025	अहमदाबाद
07 से 09 दिसम्बर 2025	सूरत
10 से 31 दिसम्बर 2025	अनिर्णीत
01 से 03 जनवरी 2026	मुम्बई
04 से 05 जनवरी 2026	लोनावाला
06 से 07 जनवरी 2026	पिम्परी
08 जनवरी 2026	यात्रा
09 से 13 जनवरी 2026	मनीला (विदेश यात्रा)
14 जनवरी 2026	यात्रा
15 से 16 जनवरी 2026	चैन्नई
17 से 19 जनवरी 2026	श्री रामेश्वरम धाम

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

जहाँ जन्म है, वहाँ मृत्यु। जहाँ उत्पत्ति है, वहाँ विनाश। मृत्यु का पीछा उसी दिन से हमारे साथ शुरू हो जाता है, जब से हमारा जन्म है। मृत्यु भी कई प्रकार की होती है। रोग भी मृत्यु है, गरीबी भी मृत्यु है और अभिमान भी मृत्यु है।

डाक पंजीकृत संख्या ग्वालियर/40020293/2020-22
रजि० समाचार पत्र-रजि० नं० MP/Hindi/2008/25627

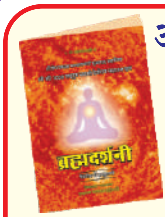

आचार्य सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज द्वारा रचियलु

'ब्रह्मदर्शनी'

सिंधीअ में समुझाणी

-प्रो. लछमण परसराम हर्दवाणी (पुणे)

पोएं अक्टूबर २०२५ अंक खां अगिते-

।। दशपदी - 18 ।।

जड़ चेतन का करे विवेका, जड़ तज जप चेतन हरि एका।
भोग विषय से रोके मन को, मोह तजे मिथ्या तन धन को।
आसुरी संपति सकल त्यागे, देवी संपति में अनुरागे।
सत्गुरु वचने हरि लख लेवे, हरि वपु जान सर्व को सेवे।
भेद भाव जिहँ कीना खण्डित, कह टेऊँ वह पूरण पण्डित।। 9 ।।

हिन दशपदीअ में सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराजिन पंडित जे गुणनि जो वर्णनु कयो आहे. जेको मनुषु जड़ चेतन जी पहचान/जाण रखे थो, जड़ पदार्थनि तां ध्यानु हटाए थो छदे, सांसारिक जड़ पदार्थनि सां प्रीत नथो लाए ऐ परम चेतन सत्ता परमात्मा परमेश्वर सां मनु जोड़े थो उहोई सचो पंडित आहे. जेको पहिंजे मन खे विषय भोग खां हटाए थो, जूठी काया माया जो मोहु जहिंखे मन में कोन्हे। आसुरी सम्पत्ति (राकासी सम्पत्ति/ जो जेको त्यागु करे थो छदे ऐ दैवी सम्पत्ति देवताउनि जा गुण पहिंजें हिरदे में धारणु करे थो। जेको सत्गुरनि जे अमृत वाणीअ खे बुधी, समुझी, हिरदे में धारण करे अन्दर में प्रभू परमात्मा जो दीदारु पाए थो ऐं हर हिक जीव में परमात्मा जो दर्शन करे जीवमात्र जी सेवा थो करे-कहिं सां भेद भावु नथो करे उही ई पूरो पण्डितु आहे।

पूरण पंडित जा उहिञाण कहिड़ा आहिन? सत्गुरु महाराज जिन इन विषय ते रोशनी विझन्दे फरमाइन था जहिंजे अन्दर में दैवीगुण आहिन-उहो सचो पंडित आहे। दैवी गुर्णाने जो वर्णनु भगवान श्री कृष्ण श्रीमद्‌भगवद्‌गीता जे सोरहे अध्याय में कयो आहे। दैवी गुण हिन रीति आहिन- निर्भयता- जहिंजे मन में कहिंजो डपु डाह कोन्हे. जहिंजो अन्तःकरण निर्मल आहे, जेको ध्यान सुमरण में लगलु आहे ऐ इन्द्रियूं जहिंजे वश में आहिन, जेको पहिजे धर्म में स्थित आहे मन-बाणीअ ऐं शरीर सां कहिंखे दुखु नथो पहुंचाए, अभिमान अहंकार जहिंजे मन में कोन्हे आदि आदि सुठा दैवी गुण जहिंजे हिरदे में आहिन सो ई सचो पंडितु आहे। बिए पासे आसुरी (राकासी) सम्पति कहिड़ी आहे, उन जो बि बयानु भगवान श्री कृष्ण हिन रीति कयो आहे- पाखण्ड -घमण्ड-अभिमान-कठोर बाणी आदि दुर्गुणनि जी गणप आसुरी सम्पदा में आहे- हिनन अवगुणनि जो जहिंजे मन में वासु कोन्हे. सत्गुरु महाराज जन उन मनुष खे ई सच्चो पण्डित चयो आहे.

'पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय ।
ढाई आखर प्रेम का , पढ़ै सु पंडित होय ।।

(हलदंडु)

सूचना

समस्त सम्माननीय सदस्यों के सूचनार्थ उनके प्रेषण पते के ऊपर सदस्यता क्रमांक रसीद संख्या व शुल्क अवधि लिखी हुई है, शुल्क अवधि समाप्त होने की सूचना को आपके पते के ऊपर LAST COPY लिखकर उसे BOLD करके दर्शाया गया है. पत्रिका की निरंतर प्राप्ति के लिये अपनी सदस्यता का नवीनीकरण सदस्यों को यथाशीघ्र करा लेना चाहिए.

– व्यवस्थापक

किसी कारणवश वितरण न होने पर निम्न पते पर वापस करें–

सम्पादक, प्रेम प्रकाश सन्देश
प्रेम प्रकाश आश्रम,
गाढ़वे की गोठ, लश्कर,
ग्वालियर 474001 (म.प्र.)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक : संतोष पंजवानी द्वारा मुद्रक : सुनील पंजवानी, सन्नी प्रिन्टर्स, मामा का बाजार, लश्कर, ग्वालियर से मुद्रित करवाकर, 401-झूलेलाल अपार्टमेंट, कृष्णा एन्क्लेव,समाधिया कॉलोनी,तारागंज, लश्कर, ग्वालियर-474001 से प्रकाशित किया गया।

कार्यालयः प्रेम प्रकाश सन्देश, प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ, लश्कर, ग्वालियर-474001
(कार्यालय फोन 0751-4045144 पर सम्पर्क समय प्रातः 8 से 10 बजे तक (तात्कालिक व्यवस्था)

सम्पादक : प्रहलाद सबनानी प्रबन्ध सम्पादक : शंकरलाल सबनानी